

अप्रैल 2015

कीमत ₹ 10

दादावाणी

किसी को दुःख देकर
आप मोक्ष में जा पाओगे
ऐसा नहीं हो सकता।

हम किसी से कोई शब्द कहें और उसे बुरा लग जाए तो वह
शब्द, अपशब्द कहा जाएगा।



मुझ से किंचित्मात्र दुःख न हो, इतना भाव रहना चाहिए।
ऐसा भाव होने के बावजूद भी अगर कुछ गलत हो जाए तो
उसका पछतावा करना।

आपको जैसा दुःख होता है वैसा दुःख किसी को नहीं
हो, इस प्रकार से रहना, उसे मानवधर्म कहा जाता है।

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : १० अंक : ६

अखंड क्रमांक : ११४

अप्रैल २०१५

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Owned by

Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printed at

Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Total 36 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये

यू.एस.ए. : १५० डॉलर

यू.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यू.एस.ए. : १५ डॉलर

यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

किंचित्मात्र दुःख नहीं हो, ऐसा भाव...

संपादकीय

हर मनुष्य सुख ढूँढ रहा है, सुख प्राप्त करने के प्रयत्न भी करता है। वह गलत नहीं है लेकिन सुख प्राप्त करने के प्रयत्न में वह खुद जाने-अन्जाने दूसरों को दुःख भी दे बैठता है। यह उसकी दृष्टि में नहीं आता। इसका मूल कारण स्वरूप का अज्ञान है।

परम पूज्य दादा भगवान की असीम कृपा से हमारा अज्ञान तो चला जाता है लेकिन डिस्चार्ज परिणाम और भ्रांति के कारण पौद्गलिक सुख की अपेक्षा से जाने-अन्जाने खुद के मन-वचन-काया से दूसरों को दुःख दे दिया जाता है। कभी-कभार उसका बचाव भी कर लेते हैं। हाँ, ज्ञानजागृति से खुद प्रतिक्रमण करके वापस फिरने के पुरुषार्थ में होता है लेकिन कभी-कभी यह पुरुषार्थ भी चूक जाता है।

जिस तरह रास्ता पार करते वक्त मनुष्य सेफसाइड के लिए कितनी जागृति रखता है? इसी तरह इस मोक्षमार्ग की सेफसाइड के लिए उतनी ही जागृति की आवश्यकता है। औरों के साथ के हिसाब में से ऋणमुक्त होने के लिए मुक्त होने के उपाय की ही ज़रूरत है। लेकिन वह इस हकीकत को भूल जाता है कि सुख की अपेक्षा में औरों को दुःख देकर खुद बंधने के कारण खड़े कर रहा है।

वास्तव में खुद दुःख नहीं देता है लेकिन उदयकर्म के कारण और फाइलों के साथ के ऋणानुबंध के हिसाबों के कारण दुःख दे देता है। लेकिन जब तक इसके जोखिम नहीं समझ लें, तब तक मोक्षमार्ग में यह भय का स्थान ही है। इसलिए रोज़मर्रा के जीवन में जागृति की बहुत ही आवश्यकता है और वह जागृति बनी रहे इसके लिए दादाश्रीने हमें प्रातःविधि में सुनहरा सूत्र दिया है कि रोज़ सुबह उठकर नक्की करो कि ‘प्राप्त मन-वचन-काया से इस जगत् के किसी भी जीव को किंचित्मात्र दुःख न हो, न हो, न हो।’

इस सूत्र के पीछे गूढ़ विज्ञान छिपा हुआ है। उस विज्ञान को हम समझ सकें, दुःख दे देने के जोखिमों से हम वाकिफ रहें और किस-किस तरह से दुःख दे देते हैं, उसे इस अक्रम विज्ञान द्वारा समझकर वहाँ पर ज्ञानजागृति सेट करें।

इस विज्ञान को हम विशेष तौर पर समझ सकें, इसलिए इस वर्ष २०१५ में एक नया प्रयोग कर रहे हैं, जिसमें एक ही विषय पर लगातार चार दादावाणी, जो एक-एक करके हर महीने मिलेंगी। ताकि महात्मा चार स्टेप से लेवल-१ का यानी मेरे ‘मन-वचन-काया से किसी भी जीव को दुःख न हो’ का गहन अभ्यास कर सकें, जो इस तरह है।

अंक-१ जीवन में दुःख किस तरह से दिए जाते हैं और दुःख नहीं देने का निश्चय पक्का करें।

अंक-२ दुःख नहीं देने की परिणामिक दृष्टि का विकास करें।

अंक-३ दिए गए दुःखों को प्रतिक्रमण के साधन से प्राचक्षित करके, उसका रक्षण न करें।

अंक-४ दुःख रहित ज्ञानीपुरुष का जीवन-चारित्र समझकर, उसे ध्येयरूप बनाएँ।

दादावाणी

‘प्राप्त मन-वचन-काया से किसी को भी दुःख नहीं हो,’ खुद के इस निश्चय को जागृतिपूर्वक पकड़े रखें और सही समझ के अनुरूप आदर्श व्यवहार करके किस प्रकार दुःखमुक्त हो सकें, इसकी विशेष समझ हमें इस संकलन में उपलब्ध होती है। जिसके आराधन से हम सभी ‘मन-वचन-काया’ से किसी को भी दुःख नहीं हो, इस सूत्र को सार्थक करके एकावतारी मोक्ष के ध्येय को सिद्ध कर लें, यही अभ्यर्थना है।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंद्रभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

किंचित्मात्र दुःख नहीं हो, ऐसा भाव...

शुरूआत करो भावना करने से

प्रश्नकर्ता : दादा, आपने जो कहा है न कि रोज़ सुबह नक्की करो कि ‘प्राप्त मन-वचन-काया से किसी को दुःख नहीं हो,’ लेकिन जब तक शरीर है (और इस व्यवहार में हैं) तब तक किसी जीव को दुःख नहीं दें, इस तरह से (ऐसे) जीना बहुत मुश्किल है।

दादाश्री : मुश्किल है इसलिए ऐसा नहीं कह सकते कि दुःख देकर ही मुझे जीना है। आपको भावना तो ऐसी ही रखनी चाहिए कि मुझे किसी को दुःख नहीं देना है। आप भावना के लिए ही ज़िम्मेदार हैं, क्रिया के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं।

आपको सिर्फ भावना करनी है कि मुझ से किसी जीव को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो। उसका अहंकार भग्न नहीं हो, ऐसा रखना चाहिए। आपके भाव में नक्की है कि ‘किसी को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो।’ ऐसा आपने नक्की किया होगा तो उसे दुःख होगा ही नहीं। इसलिए आपको नक्की करना चाहिए।

मन-वचन-काया से मैं किसी को भी किंचित्मात्र दुःख नहीं दूँगा, यदि इतना ही भाव करके चले न, तो यह भले ही अज्ञान दशा में है, आत्मरूप हुआ नहीं है, तो भी वह सब से बड़ा निष्काम कर्म है।

प्रश्नकर्ता : ‘मन-वचन-काया से किसी को भी दुःख नहीं दूँगा,’ ऐसा निश्चय करें तो क्या वह कार्य करेगा?

दादाश्री : हाँ। यह सब से बड़ा निष्काम कर्म है। सिर्फ ऐसा भाव ही, उसके बावजूद भी दुःख तो हो ही जाएगा। दुःख हुए बगैर तो रहेगा ही नहीं, लेकिन निरंतर ऐसा भाव करते रहें और फिर बाहर जाएँ, तो यह बहुत बड़ा निष्काम कर्म है। ऐसा भाव कोई करता है? इसलिए हम सिखाते हैं न कि भाई, पाँच बार ऐसे बोलकर बाहर जाना कि ‘मन-वचन-काया से किसी को किंचित्मात्र दुःख न हो।’

भाव के साथ सावधानी भी ज़रूरी

प्रश्नकर्ता : (रोज़) सुबह हम जो भाव करते हैं, मन-वचन-काया से...

दादाश्री : सिर्फ भाव नहीं, सावधानी भी रखनी पड़ेगी। किसी को किंचित्मात्र भी दुःख न हो ऐसी, इतनी सावधानी रखना ज़रूरी है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह तो ठीक है। भाव के साथ सावधानी तो रखनी ही है।

दादाश्री : यदि किसी को दुःख हो जाए तो

दादावाणी

उस दुःख के प्रतिस्पंदन आप पर ही आते हैं और आपको दुःख होने का कारण इतना ही है। लेकिन इसका भान नहीं है इसलिए दुनिया बेसुधी में चल रही है।

प्रश्नकर्ता : किसी को दुःख हुआ, उसके प्रतिस्पंदन आते हैं ?

दादाश्री : उसे दुःख हुआ वह तो हो गया। वह तो उसका हिसाब है, लेकिन उसका जो परिणाम है वह वापस अपने पर ही आता है।

प्रश्नकर्ता : उससे हमें दुःख होता है ?

दादाश्री : दुःख होगा ही। ज़बरदस्त, सामनेवाले से भी ज़्यादा। जगत् के लोग हिंसा को समझ नहीं सके हैं, इसलिए हिंसा में ही पड़े हैं। अहिंसा तो समझ में नहीं आ सकती, लेकिन हिंसा भी नहीं समझे हैं। कोई भी हिंसा को क्या समझता है कि, 'कीड़ों को मारना, वही हिंसा है।' लेकिन किसी को भी किंचित्मात्र दुःख नहीं होना चाहिए। यदि गाय-भैंस जा रही हों, तो उन्हें भी दुःख नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : जीवमात्र के लिए हम कहते हैं न?

दादाश्री : हाँ। मैं जब अठारह-बीस साल का था तब सिनेमा देखने जाता था। जूतों में नीचे नाल लगी होने की वजह से रास्ते पर चलते समय जूते आवाज़ करते थे, जिससे कुत्ता डर न जाए इसलिए मैं गली के अंदर आने से पहले ही जूते हाथ में ले लेता था। कुत्ता बेचारा चौंककर इधर-उधर देखे तो चौंकने से उसे कितना दुःख होगा! हम चौंक जाएँ तो कुछ होता है ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, होता ही है न!

दादाश्री : अतः जूते निकालकर घर आता था। किसी को भी दुःख नहीं हो, उस तरह से जीना

चाहिए। किसी को भी दुःख कैसे दे सकते हैं ? किसी को दुःख होने का मतलब खुद को ही हुआ है। फिर भी अन्जाने में हो चुके हैं, उसकी माफी माँगते रहना चाहिए। ये सारे दुःख खुद पर ही आते हैं।

प्रश्नकर्ता : आपने कुत्ते की जो बात की कि 'कुत्ता डर जाए इसलिए हम जूते निकालकर आते थे,' तो ऐसा हर एक व्यक्ति के साथ अभयदान का ध्यान कैसे रखें ताकि वह हम से डरे नहीं ?

दादाश्री : आपने नक्की किया होगा तो कैसे डरेगा ? यदि खुद नक्की करे कि 'मुझ से किसी को भी किंचित्मात्र दुःख न हो,' तो थोड़े समय के लिए कुछ झंझट हो सकती है, उसके बाद सब बंद हो जाएगा। वैसा होगा ही नहीं। आपका पक्का डिसिज़न लेने के बाद फिर ऐसा नहीं होगा। पूर्व के प्रयत्न की वजह से शायद थोड़े समय के लिए हो भी सकता है, लेकिन उसे भी आप समझ जाओगे कि 'यह पूर्व का प्रयत्न है, आज मेरी ऐसी इच्छा नहीं है।'

दुःख देकर मोक्ष में नहीं जा सकते

प्रश्नकर्ता : प्राप्त मन-वचन-काया से, इसमें 'प्राप्त' का अर्थ क्या है ?

दादाश्री : प्राप्त अर्थात् हमें जो मिला है वह, मन-वचन-काया। यदि आपका मन सामनेवाले के मन की तुलना में खराब हैं, फिर भी आपको 'किसी को दुःख न हो' ऐसे भाव करने हैं। किसी को दुःख देकर आप मोक्ष में जा सको ऐसा नहीं हो सकता। किसी भी जीव को, आपके दुश्मन को भी दुःख देकर आप मोक्ष में नहीं जा सकते।

दुःख नहीं देने का अभिप्राय

प्रश्नकर्ता : दादा, एक सवाल पूछना है। यह सवाल पूछने से पहले ही मैं आपसे माफी माँग लेता हूँ। आपने जो कहा है न कि 'प्राप्त मन-वचन-

काया से जगत् के किसी भी जीव को किंचित्मात्र दुःख न हो, दुःख न हो, दुःख न हो।' तो आप ऐसे नेगेटिव अप्रोच (प्रस्ताव) लेकर क्यों चले? 'सुख हो' ऐसे पॉजिटिव अप्रोच से क्यों नहीं चले?

दादाश्री : ऐसा है न, 'सुख हो' नहीं कह सकते। 'सुख हो' कैसे कह सकते हैं? 'सुख हो', यदि आपको हमेशा के लिए सुख है, तो फिर हमेशा कहा जा सकता है कि 'सुख हो'। हमेशा यदि आप ही अंदर थोड़े-थोड़े दुखी रहते हों, तो पहले इतना कहना चाहिए कि 'मुझ से किसी को भी दुःख न हो।' फिर हमेशा का सुख, वह वस्तु तो टॉप पर पहुँचने के बाद की है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा कहने में कोई हर्ज तो नहीं है न?

दादाश्री : नहीं। कहने की ज़रूरत ही नहीं है न। आप कहो कि 'मुझ से किसी को दुःख न हो।' यानी 'दुःख न हो,' इसका अर्थ यही है चाहे आपको सुख देने का विचार भी नहीं आए। जगत् का कल्याण हो ऐसा कह सकते हैं। अपना भी कल्याण हो और लोगों का कल्याण हो। और कभी-कभार 'सुःख हो' ऐसा कह सकते हैं, लेकिन 'दुःख न हो' कहने से ज़्यादा फायदा होगा।

प्रश्नकर्ता : 'दुःख न हो,' उससे?

दादाश्री : 'दुःख न हो' उसकी तो बात ही अलग है न। आपकी भावना क्या है? 'किसी को भी दुःख न हो।' सुख तो, यह सुख है ही नहीं। जिसे सुख मानते हैं न, वह सुख है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, हम तो अपने आत्मसुख के बारे में सोचकर ऐसा 'सुख' शब्द का उपयोग करते हैं न? दूसरों को 'सुख हो' तब हम तो उस आत्मसुख की बात करते हैं न?

दादाश्री : नहीं। लेकिन उस आत्मसुख की

बात उसकी समझ में नहीं आएगी न! उसे 'दुःख न हो' ऐसा कहें न, तो समझ में आएगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, तो इसका मतलब यह हुआ कि यह शब्द लौकिक के लिए है, अलौकिक के लिए नहीं है।

दादाश्री : मुझ से किंचित्मात्र, दुःख न हो, इतना, भाव रहना चाहिए। ऐसा भाव होने के बावजूद भी अगर कुछ गलत हो जाए तो उसका पछतावा करना। भाव यानी आपका आज का अभिप्राय ऐसा पक्का हो गया कि अब आपका अभिप्राय किसी को दुःख देने का नहीं है।

सामनेवाले की सीट पर बैठकर तो देखो

प्रश्नकर्ता : अगर किसी को दुःख (होता) ही नहीं है, तो फिर हम जब दूसरों को दुःख दें तो उसे दुःख किस प्रकार से हो सकता है?

दादाश्री : दुःख उसकी मान्यता में से गया नहीं है न! आप मुझे धौल लगाओ तो मुझे दुःख नहीं होगा, लेकिन किसी और को तो उसकी मान्यता में है, उससे दुःख है। इसीलिए उसे मारोगे तो दुःख होगा ही। 'रोंग बिलीफ' अभी तक गई नहीं है। 'कोई मुझे धौल लगाओ तो मुझे दुःख होगा', उस 'लेवल' से देखना चाहिए। किसी को धौल लगाते समय मन में आना चाहिए कि 'मुझे कोई धौल लगाए तो क्या होगा?' धौल खाना पसंद नहीं हो, और यदि बहीखाता बंद करना हो तो धौल देते समय सोचना कि वापस आएगी, तब वह सहन की जा सकेगी या नहीं?

यदि आप किसी से दस हजार रुपये उधार ले आओ और फिर आपके संजोग पलट गए, तो मन में विचार आए कि 'पैसे वापस नहीं दूँ तो क्या होनेवाला है?' उस घड़ी आपको न्यायपूर्वक जाँच करनी चाहिए कि 'मेरे यहाँ से कोई पैसे ले गया हो और मुझे वापस न दे तो मुझे क्या होगा?' ऐसी

न्यायबुद्धि चाहिए। ऐसा हो तो मुझे बहुत ही दुःख होगा। इसी प्रकार सामनेवाले को भी दुःख होगा। इसलिए मुझे जैसे वापस देने ही हैं।' ऐसा नक्की करना चाहिए और ऐसा नक्की करोगे तो फिर दे सकोगे।

खुद से किसी को दुःख न हो, वह मानवधर्म

आपको जैसा दुःख होता है वैसा दुःख किसी को नहीं हो, इस प्रकार रहना, उसे मानवधर्म कहा जाता है। मानवधर्म अर्थात् प्रत्येक बात में उसे विचार आए कि मुझे ऐसा हो तो क्या हो? यह विचार पहले न आए तो वह मानवधर्म में नहीं है। किसी ने मुझे गाली दी, उस समय मैं बदले में उसे गाली दूँ, उससे पहले मेरे मन में ऐसा होना चाहिए कि, 'यदि मुझे ही इतना दुःख हो रहा है, तो फिर मैं गाली दूँ तो उसे कितना दुःख होगा!' ऐसा समझकर वह गाली न देकर निपटारा करता है।

यह क्या मनुष्यपना कहलाएगा? पूरा दिन खा-पीकर घूमते रहे और दो एक को डाँटकर आ गए और फिर रात को सो गए। इसे मनुष्यपना कहते होंगे? इस प्रकार मनुष्य जीवन को लज्जित करते हैं। मनुष्यपना तो वह है कि शाम को पाँच-पच्चीस, सौ लोगों को ठंडक पहुँचाकर घर आए हों, पाँच लोगों को भी ठंडक पहुँचाकर आए हों, वह मनुष्यपना कहलाता है! जबकि यह तो मनुष्य जीवन को लज्जित किया! और घर के लोगों को तो तनिक भी दुःख दिया ही नहीं जाना चाहिए। जिनमें समझ न हो, वे घरवालों को दुःख देते हैं। क्रोध करना, गालियाँ देना, क्लेश करना ये सब रौद्रध्यान हैं। औरों को दुःख दे वह रौद्रध्यान।

मन में भाव बिगाड़कर दुःख देते हैं

प्रश्नकर्ता : दादा, ये दुःख कैसे दे देते हैं, वही समझ में नहीं आता।

दादाश्री : अगर पाँच-सात दिन तक मेहमान नहीं जाएँ तो मन में भाव बिगाड़ जाते हैं कि, 'अरे ये लोग अभी कहाँ से आ गए हैं? ये लोग जाएँ तो अच्छा।' इसे भाव बिगाड़ना कहते हैं, ऐसा नहीं होना चाहिए। व्यवस्थित के अधीन आए हैं और व्यवस्थित के अधिन जाएँगे। अपने हाथ में हैं कुछ?

अपने यहाँ नापसंद मेहमान आया हो तो आनंद होता है? अच्छा लगता है?

प्रश्नकर्ता : अच्छा नहीं लगता।

दादाश्री : लोग सहन कर लेते हैं और बोलते नहीं हैं, और मन ही मन गालियाँ देते हैं कि 'यह नालायक यहाँ कहाँ से आ गया?' भगवान ने कहा है कि इसके बजाय साफ-साफ कह दिया होता तो अच्छा था। मन अर्थात् अगले जन्म का चित्र! लोग ऐसे अगला जन्म बिगाड़ देते हैं। मुँह पर बोल दिया होता तो इस जन्म में उसे मेहमान मारता या फिर उसकी बुराई करता, लेकिन इसी भव में हिसाब साफ हो जाता था और मन में उल्टा सोचा उससे तो अगले जन्म का सबकुछ बिगाड़ दिया। अब अगर वे लोग चार दिन तक रहें, तो तब तक मन में 'ये कब जाएँगे, कब जाएँगे' होता रहता है और खुद तो पूरी रात सोता भी नहीं है जबकि मेहमान तो आराम से सो गए होते हैं!

भाव बिगाड़कर मन को संकुचित मत होने देना

ये जो संयोग हैं, वे वियोगी स्वभाव के हैं। इनका स्वभाव ही वियोगी है। मेहमान आएँ तो समझना है कि 'यह जो संयोग आया है, वह वियोगी स्वभाव का है। इसका काल आएगा, तब अपने आप ही चला जाएगा।' हमें उसे निकालने की ज़रूरत नहीं है, मन बिगाड़ने की ज़रूरत नहीं है।

इसलिए हम सभी से कहते हैं कि किसी भी संयोग में भाव मत बिगाड़ना। कभी अगर अचानक मेहमान आ जाएँ, तो भी भाव मत बिगाड़ना। सब्जी-

रोटी खिलाना, लेकिन अपना भाव मत बिगाड़ना। मन दुर्बल मत होने देना। हमसे किसी के मन क्लेशित नहीं होने चाहिए। हमें सभी को खुश करके निकलना है।

औरों को दुःख देंगे तो खुद को दुःख मिलेगा

यह मन, वह तो पूरी दुनिया है, इसलिए यदि किसी को परेशान करें तो मन में दुःख उत्पन्न होता है और दूसरों को सुख दें तो सुख मिलता है। दुनिया को सुख देंगे तो मन को सुख होगा। तू दूसरों को सुख देकर दुःख माँगेगा तो वह नहीं मिलेगा। मन तो दुनिया है, जैसा चलाएगा वैसा मिलेगा। कवि कहते हैं न, 'मनमंदिर ना आंगणियामां कल्पतरुवर उगिया रे (मनमंदिर के आँगन में कल्पतरु उगे हैं)।' इसलिए यदि तुझे सांसारिक सुख चाहिए तो तुझे जो-जो पसंद नहीं है वह दूसरों को मत देना। सिर्फ खुद के पास जो समझ है कि 'मुझे यह पसंद नहीं है,' तुझे खुद को जिससे दुःख होता है, वह तू दूसरों को मत देना, तो तू सुखी हो जाएगा। सुखी होने के लिए कोई शास्त्र पढ़ने की भी जरूरत नहीं है। जिन्हें तू दुःख मानता है, उनसे आगे तो और कई दुःख हैं, लेकिन तू जिसे दुःख मानता है वह दूसरों को देगा तो तेरे जैसा मूर्ख और कौन? तो फिर तुझे सुख मिलेगा किस तरह? जान-बूझकर देना और अन्जाने में देना, उसमें फर्क नहीं है?

यह बात तो जिसे ज्ञान नहीं मिला वह भी समझता है। उससे क्या होता है कि दुःख आना बंद हो जाता है और सुख आना शुरू हो जाता है। यह तो, धर्म खुद के पास ही है। इतना करेगा तो सुखी होगा ही। खुद पर जो इफेक्ट होता है वह सामनेवाले पर भी अवश्य होगा ही न? तेरे प्रति मेरी आँखों में तुझे कोई भाव महसूस नहीं हो तो तेरी आँखों में वैसे भाव मत लाना कि जिससे सामनेवाले को दुःख हो। जिससे अपने को दुःख होता हो, उससे औरों को कैसे दुःख दे सकते हैं?

शब्दों से उत्पन्न होनेवाले दुःख के अध्यवसन

प्रश्नकर्ता : दादा, और किस तरह से सामनेवाले को दुःख दे देते हैं?

दादाश्री : मनुष्य को तीन प्रकार के दुःख हैं; देह के दुःखों को 'कष्ट' कहते हैं। दूसरे हैं, वाणी के दुःख, उन्हें 'घाव' कहते हैं, हृदय में घर कर लें तो फिर जाते नहीं हैं और तीसरे, मन के दुःख, वे 'दुःख' कहलाते हैं। मन से इतनी परेशानी नहीं है, वाणी से परेशानी है। क्योंकि मन तो गुप्त तरीके से चलता है, लेकिन वाणी तो सामनेवाले की छाती पर आघात लगाती है।

हम किसी से कोई शब्द कहें और उसे बुरा लग जाए तो वह शब्द, अपशब्द कहा जाएगा। यों ही अगर अपशब्द बोल रहा हो तो भी जोखिम है और अगर यों ही अच्छे शब्द बोलें तो भी हितकारी है। लेकिन यदि यों ही गलत शब्द, अपशब्द बोलें तो वह अहितकारी है। दूसरों से कुछ कहने पर उन्हें दुःख हो जाए तो वे सब अपशब्द कहलाते हैं।

शब्द बोलने के जोखिम तो समझो

अगर कठोर शब्द कह दिया तो उसके फलस्वरूप कितनी देर तक हमें उसके स्पंदन सुनाई देंगे। अपने मुँह से एक भी अपशब्द नहीं निकलना चाहिए। सुशब्द होना चाहिए लेकिन अपशब्द नहीं होना चाहिए। और गलत शब्द निकल गया यानी खुद के अंदर भाव हिंसा हो गई, उसे आत्म हिंसा माना जाता है। अब लोग यह सब चूक जाते हैं और पूरे दिन कलह करते रहते हैं।

हर एक शब्द बोलना जोखिम भरा है। इसलिए यदि बोलना न आए तो मौन रहना अच्छा। धर्म का बोलो तो धर्म में जोखिम और व्यवहार का बोलो तो व्यवहार में जाखिम। व्यवहार का जोखिम तो खत्म हो जाएगा लेकिन धर्म का जोखिम बहुत

ज्यादा रहता है। इससे धर्म के लिए बहुत ज्यादा अंतराय पड़ते हैं।

सीधा बोलो, वर्ना बोलो ही मत

प्रश्नकर्ता : मुझे ऐसा डर है कि यदि हम शब्दों द्वारा एक-दूसरे को समझें तो उसमें गलत भी समझ सकते हैं।

दादाश्री : सही भी हो सकते हैं न! यदि हम शब्दों से सामनेवाले से कहें कि, 'भाई, दूध दो'। ऐसा अगर दूधवाले से कहें तो इसमें गलत क्या है? शब्दों से ही दूध मिलेगा न? या फिर 'कुछ दो', कहेंगे तो दही दे देगा। उसके पास जो होगा, वही देगा न! ऐसा किसने कहा कि शब्दों द्वारा गलत हो सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : लेकिन इन शब्दों की वजह से बहुत झगड़े हो जाते हैं।

दादाश्री : कर्म के उदय से झगड़े चलते रहते हैं, लेकिन जीभ से उल्टा बोलना बंद करो। बात पेट में ही रखो, घर में या बाहर बोलना बंद कर दो। शब्दों से ही तो जगत् खड़ा हो गया है। जब शब्द बंद (समाप्त) हो जाएँगे तब जगत् बंद (समाप्त) हो जाएगा। इस दुनिया में जो भी लड़ाईयाँ हुई हैं, वे सारी शब्दों की वजह से ही हुई हैं। शब्द मीठे होने चाहिए और यदि मीठे शब्द नहीं हों तो बोलना ही मत। अरे! जिसने आपके साथ लड़ाई की हो, उसके साथ भी मीठा बोलोगे न तो दूसरे दिन फिर से एक हो जाएँगे।

यदि एक ही शब्द सामनेवाले के साथ गलत बोलोगे लड़ाई शुरू हो जाएगी और उस वक्त यदि कोई मीठा शब्द बोल दिया न कि, 'भाई, ऐसा है, वैसा है' तो लड़ाई खत्म हो जाएगी। इसलिए सीधा बोलो, वर्ना बोलना ही मत। और यदि बोलना रोक नहीं पा रहे हों तो मुँह दबाकर बोलना, ताकि सामनेवाला समझ न पाए।

शब्दों से कलेजे पर लगा हुआ घाव जल्दी नहीं भरता

हम आराम से बैठे हों और ज़रा कोई आकर कहे कि, 'आप बेअक़ल हो,' इतना कहे कि हो गया, बस! अब उसने क्या पत्थर मारा है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : सिर्फ शब्द ही हैं। यदि पत्थर मारा हो तो हम समझें कि 'इसे यहाँ पर लग गया इसलिए जलन हो रही है।' लेकिन यह तो बिना पत्थर के चोट लग गई।

प्रश्नकर्ता : शब्दों में इतना असर (प्रभाव) होता है?

दादाश्री : उसी का असर है यह सारा। शब्दों का ही असर है। जगत् में यदि कलेजे पर घाव लग जाए तो सौ-सौ जन्मों तक नहीं जाता। 'कलेजे पर घाव लग गया, ऐसा कह दिया तुमने,' कहेंगे। यह असर ही है। जगत् शब्दों के असर से ही खड़ा हो गया है।

कभी कलेजे पर घाव लग जाए, क्या ऐसे शब्द कहे हैं? बचपन में कभी आपने ऐसा कह दिया है क्या? अरे! ज्ञानी तो मैं अब हुआ हूँ, लेकिन पहले कैसा होऊँगा? अरे! शब्द बोलूँ तो सामनेवाला व्यक्ति कहता कि, 'आपके शब्द से मेरा सिर फट गया!' तो वह शब्द कितना खराब होगा? सामनेवाले का सिर फटने लगे तो ठीक होने में देर लगती है। फिर भी हम इस पद पर आ पहुँचे हैं। पूर्वजन्म में काफी कुछ किया था, उसके फलस्वरूप यह प्राप्त हुआ है।

कितनी ही बहनें मुझ से कहती हैं कि, 'मेरे पति ने मुझे ऐसा कहा था, इसलिए मेरे कलेजे पर चोट लगी है, जो मैं पच्चीस सालों बाद भी भूल नहीं पाती।' यानी वाणी से कैसा पत्थर मारा होगा, वे घाव फिर भरते नहीं! इसलिए घाव नहीं देने चाहिए।

गैरजिम्मेदारीवाले शब्द औरों को चोट पहुँचाते हैं

यदि सामनेवाला उम्र में बड़ा हो फिर भी उनसे कहेंगे, 'आप बेअक़ल हो'। इनकी अक़ल नापने निकले! ऐसा कहीं बोला जाता होगा? फिर झगड़े ही होंगे न! सामनेवाले को दुःख हो जाए ऐसा नहीं बोलना चाहिए कि 'आप बेअक़ल हो'। सामान्य लोग तो नासमझी की वजह से ऐसा बोलकर जिम्मेदारी स्वीकार करता है। लेकिन जो समझदार हों, वे तो खुद ऐसी जिम्मेदारी लेंगे नहीं न। यदि सामनेवाला गलत बोले तो भी खुद सही बोलेगा। सामनेवाला तो नासमझी से चाहे जो पूछे लेकिन खुद गलत नहीं बोलना चाहिए। खुद जिम्मेदार है।

'आप समझ नहीं रहे' ऐसा भी नहीं बोलना चाहिए। आप ऐसा कह सकते हैं कि 'भाई, सोचो तो सही! आप ज़रा सोचो तो।' अगर ऐसा कहें कि, 'समझ ही नहीं रहे' तो क्या सब मूर्ख ही हैं? लोग ऐसा बोलते हैं या नहीं बोलते?

प्रश्नकर्ता : बोलते हैं। बुद्धिशाली ऐसा ही कहते हैं कि, 'इसे तो समझ ही नहीं है।'

दादाश्री : हाँ। ऐसा बोलते हैं। सामनेवाले से ऐसा नहीं कहना चाहिए कि 'आप समझ नहीं रहे' ऐसा कहना, वह सबसे बड़ा ज्ञानावरण कर्म है। 'आप नहीं समझ रहे' ऐसा नहीं कहना चाहिए, लेकिन 'आपको समझा दूँगा' ऐसा कहना चाहिए। यदि 'आप समझ नहीं रहे' कहेंगे तो, सामनेवाले के कलेजे पर चोट लगेगी।

करे सामनेवाले को दुःखी और खुद को रोगिष्ठ

ये शब्द जो निकलते हैं न, वे दो तरह के शब्द हैं। इस दुनिया में शब्द की दो क्वालिटी हैं। अच्छे शब्द शरीर को निरोगी बनाते हैं और खराब शब्द शरीर को रोगिष्ठ बनाते हैं। इसलिए गलत शब्द नहीं निकलना चाहिए 'एय नालायक' कहे, अब

'एय' शब्द नुकसानदेह नहीं है लेकिन 'नालायक' शब्द बहुत ही नुकसानदेह है।

'तेरे में अक़ल नहीं है,' वाइफ (पत्नी) से ऐसा कहना, यह शब्द उसके लिए दुःखदाई है और खुद के लिए रोग उत्पन्न करते हैं। फिर वह कहेगी, 'आप में कहाँ बरकत है!' यानी दोनों में ही रोग उत्पन्न होगा। पत्नी बरकत ढूँढती है और पति उसमें अक़ल ढूँढता है! सभी जगह यही दशा है! स्त्रियों को पुरुषों के साथ झगड़े नहीं करने चाहिए, क्योंकि खुद बंधनवाले हैं। इसलिए निबेड़ा ला देना चाहिए।

कठोर शब्दों से लगती है दिल पर चोट

प्रश्नकर्ता : कितने ही घर ऐसे होते हैं कि जहाँ वाणी से बहस होती रहती है, लेकिन मन और हृदय साफ होते हैं।

दादाश्री : यदि वाणी से क्लेश हो रहा हो तो सामनेवाले के हृदय पर असर होता है। लेकिन यदि औपचारिक रहे तो फिर हर्ज नहीं है। ऐसा है न, बोलनेवाला यदि हृदय से और मन से साफ हो, तो वह बोल सकता है। लेकिन सुननेवाले को तो, कि जैसे ऐसा लगता है कि जैसे उसे पत्थर लगा, इसलिए क्लेश होगा ही। जहाँ कोई भी बोल (शब्द) खराब और विचित्र है, वहाँ क्लेश होगा ही।

प्रश्नकर्ता : कई बार सामनेवाले पर असर नहीं होता।

दादाश्री : होता ही है। वह तो सिर्फ दिखावा करते हैं, बस इतना ही! अंदर तो असर होता है। मन तो फिर भी बहुत सूक्ष्म चीज़ है। शायद कभी खराब शब्द निकल गया, वह सामनेवाले पर असर हुए बगैर नहीं रहता। शब्द हमेशा दिल पर चोट लगाते हैं। कुछ लोग तो ऐसे शब्द बोलते हैं कि हार्ट भी फेल हो जाता है। ये तो तरह-तरह के लोग! शब्द बहुत विषम है। यदि शब्द नहीं होते न, तो काम ही बन जाता। यदि शब्द नहीं होते तो मोक्ष

तो अत्यंत सहज है। इस काल में वाणी से ही बंध पड़ता है। इसलिए किसी को एक शब्द भी नहीं कहना चाहिए।

ये बोल एक ऐसी चीज़ है कि अगर संभालकर बोला जाए तो सारे महाव्रत इसमें समा जाते हैं।

वाणी से दुःख दे देने के फल कैसे?

लोग क्या बोलने में कुछ भी बाकी रखते हैं? जिसने पिछले जन्म में कहा-सुनी की है और हर किसी को गालियाँ दी हैं तो फिर उसकी जीभ (आवाज़) चली जाती है। और क्या होगा? यदि कर्म कम होंगे तो फिर पाँच-सात वर्षों बाद आवाज़ वापस आ जाएगी। ऐसा कुछ भी नहीं है।

गलत वाणी बोलने से ही तो यह जीभ (आवाज़) चली गई न। जीभ का जितना दुरुपयोग करोगे, उतने समय के लिए जीभ चली जाएगी, पाँच वर्ष के लिए, दस वर्ष के लिए, एक प्रकार का दंड है। किसी की पच्चीस साल बाद भी जीभ खुल जाती है, किसी की पूरी ज़िंदगी के लिए भी नहीं खुलती। ये सब दंड हैं।

दुःखदाई शब्द बोलने का परिणाम क्या?

एक भी कड़वा शब्द नहीं बोलना चाहिए। कड़वा बोलने से तो कितने बवाल मचे हैं। एक ही शब्द 'अंधे के अंधे,' इस शब्द से तो पूरा महाभारत खड़ा हो गया। और तो कोई खास कारण ही नहीं था। यही मुख्य कारण था। द्रौपदी ने ऐसा कहा था न? ताना मारा था न? अब उसका फल भी द्रौपदी को मिला। अगर कभी एक शब्द भी कड़वा बोला होगा तो उसका फल मिले बगैर रहेगा क्या?

प्रश्नकर्ता : एक शब्द पर से ही यह सारा घमासान मच गया!

दादाश्री : एक शब्द पर ही यह सब हुआ है। यदि वह शब्द निकला नहीं होता न, तो कुछ

भी नहीं होता। इसलिए शब्द बोलने में तो बहुत कंट्रोल (नियंत्रण) रखना चाहिए। जो शब्द लोगों के लिए दुःखदाई बन जाएँ, ऐसे शब्द नहीं बोलने चाहिए। इसके लिए रोज़ाना अभ्यास करना चाहिए। यानी मनुष्य को यह संभलकर बोलना चाहिए।

यों ही परेशान करके दुःख देते हैं

कितने मास्टर तो यदि बच्चा नहीं पढ़ता, प्रश्नों के उत्तर नहीं देता तो उसे डाँटते हैं कि, 'तेरी समझ में कुछ आता है? बोलता है या नहीं? मूर्ख! बोल!' अब, बच्चा परीक्षा में पास हो जाए, इसलिए तो मास्टर के पास ट्यूशन रखवाते हैं, लेकिन ऐसा करने से बच्चा बेचारा बौखला जाता है और मास्टर चिढ़ता रहता है। तो मास्टर की हालत क्या होगी? आपके जैसे देखनेवाले कहेंगे कि 'बच्चा तो बौखला गया है लेकिन तू क्यों इस तरह पागलपन दिखा रहा है? सीधा मर (रह) न! सीधी तरह से रह न! वर्ना तू तेरी पत्नी के लायक नहीं रहेगा! उसे (बच्चे को) तेरी बात समझ नहीं आ रही है, इसलिए बोखला गया है बेचारा! और तू पागलपन दिखा रहा है और चिढ़ रहा है।' और कहता है, 'बोल न, कुछ बोल नहीं रहा, गूंगा हो गया है' ऐसा कहकर कान पकड़वाता है! घनचक्कर! ऐसा क्यों कर रहा है? कितने ही मास्टर ऐसा करते हैं! ट्यूशन रखते हैं और ऐसा...! और फिर कहते क्या हैं कि बच्चा मेरे सिर पर पड़ा है! अरे, बच्चा सिर पर नहीं पड़ा, तू बच्चे के सिर पर पड़ा है! आपको समझ नहीं जाना चाहिए कि बच्चा डल (मंद) है। इसलिए डलनेस की वजह से वह जितना समझ पाए उतना समझाओ। ज़्यादा मत समझाओ। उससे कहना है कि यह कविता याद करके ले आना फिर यदि नहीं करे तो कुछ नहीं। लेकिन यह तो मन में कल्पनाएँ करता है, 'अरे, बोल ही नहीं रहा! गूंगा है।' अरे, गूंगा नहीं है। तू क्या कहना चाहता है, उसे वह समझ नहीं पा रहा है। इसलिए वह बेचारा कुंठित हो गया

है! यदि तू उसे ज्यादा ऐसे करता रहेगा, परेशान करता रहेगा तो उसे शॉक (धक्का) लगेगा। इलेक्ट्रिक का शॉक लगने से इंसान कैसा हो जाता है, फिर वह वैसा हो जाएगा। यह यों ही परेशान करता रहता है!

बच्चों को कभी मारना ही मत। उनसे कोई गलती हो जाए तो धीरे से माथे पर हाथ फेरकर उन्हें समझाना जरूर। प्रेम दोगे तो बच्चा समझदार बनेगा। एक पौधे को भी उगाना हो तो आप प्रेम से उगाओगे तो अच्छी तरह उगेगा। लेकिन यों ही पानी डालते रहो और चिल्लाते रहो, तो कुछ नहीं होगा। एक पौधा उगाना हो तो यदि आप कहो कि, ओहोहो! पौधा अच्छा निकल आया है, तो उसे अच्छा लगता है! फिर वह भी बड़े-बड़े अच्छे फूल देता है! तो फिर इन मनुष्यों पर तो कितना अधिक असर होता होगा!

मज़ाक उड़ाने से उत्पन्न होनेवाले दुःख अत्यंत जोखमी

प्रश्नकर्ता : दादा, वाणी के उपयोग से अन्य किस तरह से दुःख दे देते हैं?

दादाश्री : इस काल में तो मज़ाक भी नहीं कर सकते। एक शब्द भी नहीं बोल सकते। यदि मोटे हों तो उन्हें मोटे नहीं कह सकते। यदि लंबे हों तो उन्हें लंबे नहीं कह सकते। लोग तो प्लास्टिक जैसे (टूट जाए ऐसे) हो चुके हैं। अपने लोग तो चाहे जिसकी निंदा करते हैं। सिर्फ मनुष्य का तो ठीक है लेकिन इन फ्रूट्स की भी निंदा करते हैं। यह बादीवाला है, कहेंगे। इससे गर्मी हो जाएगी। अरे, तुझे बादी होगी, दूसरे को नहीं। लेकिन इनकी भाषा ही टेढ़ी है, वहाँ क्या?

बोल से ही जगत् खड़ा हुआ है और बोल से ही जगत् बंद हो जाएगा।

इन सुधरे हुए घरों में, सभ्य लोगों के यहाँ असभ्य वर्तन के दुःख नहीं होते, असभ्य वाणी के

दुःख होते हैं। इन लोगों के घर पर कोई पत्थर मारता होगा? नहीं, वचन बाण मारते हैं। अब यह पत्थर मारे वह अच्छा या वाक्बाण मारे वह अच्छा?

प्रश्नकर्ता : हमने तो मुख्यरूप से यही धंधा किया है।

दादाश्री : लेकिन अभी भी उसके लिए प्रतिक्रमण कर सकते हो न! हमने भी यही किया था न! और यह तो बहुत गलत है। मेरा भी यही झंझट था। मेरी बुद्धि आवृत थी, तो वह क्या करती? बगावत तो करेगी ही न! यानी अधिक बुद्धि हो गई उसका इतना लाभ(?) न! इसलिए हँसी उड़ानेवाले को यों ही दुःख भुगतना पड़ता।

मुझे मज़ाक उड़ाने की बहुत आदत थी। मज़ाक यानी कैसी कि बहुत नुकसानदेह नहीं, लेकिन सामनेवाले के मन पर असर तो होता था न? अपनी बुद्धि अधिक विकसित हो, उसका दुरुपयोग किसमें हुआ? कम बुद्धिवाले की मज़ाक उड़ाई उसमें! यह जोखिम जब से मुझे समझ में आया, तब से मज़ाक उड़ाना बंद हो गया। मज़ाक तो कभी उड़ाई जाती होगी? मज़ाक उड़ाना तो भयंकर जोखिम है, गुनाह है! मज़ाक तो किसी की भी नहीं उड़ानी चाहिए।

सावधान रहो, मज़ाक करने के परिणाम क्या?

प्रश्नकर्ता : लेकिन अधिक बुद्धिवाले की मज़ाक उड़ाने में क्या हर्ज है?

दादाश्री : नहीं, लेकिन कम बुद्धिवाला स्वाभाविक रूप से मज़ाक उड़ाता ही नहीं न?

कोई (व्यक्ति) ऐसे-ऐसे करके चल रहा हो, तो हमारे यहाँ लोग हँसते हैं। अरे, क्या मज़ाक उड़ा रहा है? भीतर भगवान समझ गए सबकुछ! भगवान की ऐसी दशा हुई, उस पर तू मज़ाक उड़ा रहा है, ऐसा? तेरी दशा भी वैसी ही होगी, ऐसा नियम ही है! इसलिए इस दशा का ध्यान रखो।

कोई ऐसे-एसे (लंगड़ाते हुए) चल रहा हो, और उस पर यदि हम हँसे, मज़ाक करें न, तो भगवान कहेंगे, 'यह फल लो।' इस दुनिया में मज़ाक तो किसी भी प्रकार का मत करना। मज़ाक उड़ाने की वजह से ही ये सब अस्पताल बने हैं। ये पैर-वैर वगैरह की जो टूट-फूट है न, वह मज़ाक करने का फल है। और हमारा भी यह मज़ाक करने का फल आया है।

इसलिए हम कहते हैं न, 'किसी की भी मज़ाक करना तो बहुत बुरा कहलाता है। क्योंकि वह भगवान का मज़ाक उड़ाने के बराबर है। चाहे गधा है लेकिन आफ्टर ऑल (अंततः) क्या है? भगवान है।' हाँ, आखिर में तो भगवान ही है न! जीवमात्र में भगवान ही रहे हुए हैं न! मज़ाक किसी का भी नहीं उड़ाना चाहिए न! हम हँसे न, तो भगवान समझ जाते हैं कि 'हाँ, अब आ जा, तेरा हिसाब बराबर कर देता हूँ इस बार।'

निर्दोष मज़ाक से किसी को दुःख नहीं होता

किसी के साथ ऊँचे स्वर में बोलें न, उससे सामनेवाले को दुःख हो जाए, अरे, ज़रा सा किसी का 'जोक' (मज़ाक) उड़ाया हो और सामनेवाला ज़रा कच्चा हो और ज़रा चला (सहन कर) लेता हो तो वह अतिक्रमण किया कहलाएगा। हम 'जोक' करते हैं लेकिन निर्दोष 'जोक' करते हैं। हम तो उसका रोग निकाल देते हैं और उसे शक्तिशाली बनाने के लिए 'जोक' करते हैं। ज़रा सा मज़ा आ जाए, आनंद आ जाए और इससे वह आगे बढ़ता जाए। बाकी वह 'जोक' किसी को दुःख नहीं देता। ऐसा यह मज़ाक होना चाहिए या नहीं होना चाहिए? वह भी समझता है कि ये मज़ाक कर रहे हैं। खिल्ली नहीं उड़ा रहे, मज़ाक कर रहे हैं।

फिर भी ऐसी मज़ाक करने में हर्ज नहीं है कि जिससे किसी को दुःख नहीं हो और सभी को

आनंद हो। उसे निर्दोष मज़ाक कहा है। वह तो हम अभी भी करते हैं, क्योंकि मूल (स्वभाव) जाता नहीं न? लेकिन उसमें निर्दोषता ही होती है!

टीका, आत्मज्ञान को बाधक

प्रश्नकर्ता : कई बार सामने कह नहीं पाता, लेकिन पीठ पीछे दूसरों से उनकी बुराई कर देता हूँ।

दादाश्री : उल्टा ही बोलते रहना, उसे निंदा कहते हैं। और उसके प्रत्यक्ष दिखाई देनेवाले दोषों को ओपन (खुले) करना। उसे टीका कहते हैं। किसी के दिखाई देनेवाले, और नहीं दिखाई देनेवाले सभी दोषों के बारे में बोलता रहता है। जो दुःखी हो वही किसी की टीका करता है, दुःखी ही किसी को छेड़ता है। सुखी इंसान किसी की टीका नहीं करता। ये जो दुःखी लोग हैं, वे यदि ऐसा करते हैं और उससे उनको आनंद मिलता हो तो भले ही करें।

किसी की ज़रा सी भी टीका करना, केवलज्ञान में बाधक है। अरे, आत्मज्ञान में भी बाधक है, समकित में भी बाधक है। टीका हर तरह से बाधक है। टीका करने के लिए फुरसत ही नहीं मिलनी चाहिए। यदि सामनेवाले की टीका करोगे तो उसकी आराधना की टीका की, ऐसा कहा जाएगा। वह भयंकर गुनाह है। आप सामनेवाले को समर्थन न दे सको तो कोई बात नहीं, लेकिन टीका तो करना ही मत। यदि टीका है तो वीतराग का विज्ञान नहीं है। वहाँ पर धर्म है ही नहीं, अभेदता है ही नहीं।

निंदा करने से आता है ज्ञान पर आवरण

निंदा, वह विराधना में आती है। किसी की भी निंदा मत करना। फिर भी लोग पीठ पीछे निंदा करते हैं। अरे! निंदा नहीं करनी चाहिए। वातावरण में सारे परमाणु ही भरे पड़े हैं। पहुँच जाता है

सबकुछ। किसी के लिए गैरजिम्मेदारीवाला एक शब्द भी नहीं बोलना चाहिए। और यदि बोलना ही है तो कुछ अच्छा बोलो, कीर्ति बोलो। अपकीर्ति मत बोलना।

किसी भी व्यक्ति की व्यक्तिगत बात करने का कोई अर्थ ही नहीं है। सामान्य भाव से बात को समझने की जरूरत है। व्यक्तिगत बात करना तो निंदा कहलाती है। और निंदा तो अधोगति में जाने की निशानी है। किसी की भी निंदा करने का मतलब आपके खाते में डेबिट हुआ और उसके खाते में क्रेडिट हुआ। ऐसा व्यापार कौन करेगा? और इंसान की निंदा करना, वह उसे मारने के बराबर है। इसलिए निंदा में तो बिल्कुल भी पड़ना ही मत। लोगों की निंदा कभी भी नहीं करनी चाहिए, वह पाप ही है।

किसी भी व्यक्ति की निंदा नहीं करनी चाहिए। अरे! उसके बारे में ज़रा सी भी बातचीत नहीं करनी चाहिए। उससे भयंकर दोष लग जाता है। उसमें भी यहाँ सत्संग में, परमहंस की सभा में तो किसी के भी बारे में कोई गलत बातचीत नहीं करनी चाहिए। एक ज़रा सी गलत कल्पना से ज्ञान पर कितना बड़ा आवरण आ जाता है! तो फिर यदि इन 'महात्माओं' की टीका, निंदा की जाए तो कितना ज़बरदस्त आवरण आ जाएगा? सत्संग में तो दूध में शक्कर की तरह घुल जाना चाहिए। यह बुद्धि ही अंदर गड़बड़ करती है। हम सभी के बारे में सबकुछ जानते हैं, फिर भी किसी के लिए एक शब्द भी नहीं बोलते। एक भी शब्द गलत बोलने से ज्ञान पर बहुत बड़ा आवरण आ जाता है।

ताने मारकर दुःख देते हैं हिंदुस्तानी

प्रश्नकर्ता : यदि किसी से कुछ कड़वी बात कहनी हो तो इस तरह घुमाकर कहते हैं कि उसे

लगता है कि यह मुझे ही कहा गया है, लेकिन वह हमारी गलती नहीं निकाल सकता।

दादाश्री : यह तो बल्कि उसे ताना मारते हैं और ताने मारना, तो बड़ी हिंसा कहलाती है।

इन अक्ल के बोरों को ताने मारना बहुत आता है। आपने भी ताने सुने हैं। मायके में कौन से दुःख पड़े, ससुराल में कौन से दुःख पड़े, इन सब की खुद के पास नोंध (अत्यंत राग अथवा द्वेष सहित लंबे समय तक याद रखना, नोट करना, नोट डाउन) होती है न? वे घाव जल्दी से भरते नहीं हैं न?

ताना तो बहुत बड़ा, ज़बरदस्त होता है न? अब यदि इस ताने की अंग्रेजी करनी हो तो हालत खराब हो जाएगी न?

प्रश्नकर्ता : टॉन्ट।

दादाश्री : नहीं। टॉन्ट पर्याप्त नहीं है। टॉन्ट तो कुछ भी नहीं है। टॉन्ट तो फॉरेन में भी मारते हैं। यह तो ताना! फॉरेन में तो यह होता ही नहीं है न! यह ताना तो कलेजे पर आघात लगने जैसा होता है।

तय करना ही आपका धर्म है

प्रश्नकर्ता : पहले आपने बात की थी कि वाणी से किसी को किंचित्मात्र भी दुःख न हो, तब आपने कहा था कि सामनेवाले के शुद्धात्मा के साथ पहले ही बात-चीत कर लेनी चाहिए, बाद में फिर मौन रहेंगे तो हर्ज नहीं है। क्या उस बात-चीत में तय करना है कि किसी को किंचित्मात्र भी दुःख न हो?

दादाश्री : ऐसा भाव तो हमेशा रहता है। हम तो शुद्धात्मा हो गए न, इसलिए 'इस जगत् में किंचित्मात्र दुःख न हो।' हमेशा ऐसा होना चाहिए। बल्कि आपको कहना है कि चंदू बोल, 'यह मन-

दादावाणी

वचन-काया से किसी को किंचित्मात्र भी दुःख न हो।'

जैसा वह तय करेगा, वैसा ही होगा। तुम्हारी इच्छा नहीं है न किसी को दुःख देने की? ऐसा तय करके बोलते रहना है कि 'चंदू की देह से इस दुनिया में किसी को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं हो!'

तय करना ही अपना धर्म है। सामनेवाले से ऐसी आशा रखना गुनाह है। यदि हम किसी को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं देंगे तो हमें भी कोई दुःख नहीं देगा। और यदि दुःख देता है तो पहले का हिसाब होगा, तभी देगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, मेरा ऐसा तय तो रहता है कि 'यदि कोई मुझे दुःख दे रहा है तो वह मेरे पहले के हिसाब के आधार पर ही दे रहा है लेकिन अब आज मुझे उसे दुःख नहीं देना है।'

दादाश्री : और आपको तय करना है कि 'किसी भी तरह से अब मुझ से किसी को भी किंचित्मात्र भी दुःख न हो। वह दुःख दे जाए तो भले दे जाए लेकिन मुझे नहीं देना है।' फिर न्याय में रहना चाहिए। यदि वह जान-बूझकर दुःखी हो तो उसका अपने पास कोई उपाय नहीं है। यदि वह नासमझी की वजह से दुःखी हो तो उसका उपाय नहीं है।

शंका से दुःख देना, वह बहुत बड़ा गुनाह है

मनुष्य को ये जितने भी ताप हैं न, ताप, संताप, परिताप, उताप, वे सभी शंका से खड़े हुए हैं। शंका सबकुछ उल्टा दिखाती है। भयंकर अज्ञानता, उसी को शंका कहते हैं। शंका तो बुद्धि की दखल है। अक्रलवाले यानी अधिक सोचनेवाले, अधिक बुद्धिवाले। जब कोई दुःख भुगतना पड़ता है, वास्तव में दुःख भुगतना पड़ता है, तब शंका उत्पन्न होती

है। और शंका में कितना दुःख पड़ता होगा? किसी भी प्रकार से शंकाशील बनना वह सब से बड़ा गुनाह है।

प्रश्नकर्ता : शंका में किस तरह का नुकसान होता है, वह ज़रा समझाइए न!

दादाश्री : शंका, वह दुःख ही है न! प्रत्यक्ष दुःख! वह क्या कम नुकसान कहलाएगा? शंका में गहरा उतरे तो मरण तुल्य दुःख होता है।

प्रश्नकर्ता : वह शूल की तरह रहता है?

दादाश्री : शूल तो अच्छा है, लेकिन शंका में तो उससे भी अधिक दुःख होता है। शूल का मतलब तो कोई दूसरी चीज़ इसमें घुस गई हो तो चुभती रहती है, बस इतना ही। जबकि शंका तो मार देती है इंसान को, संताप खड़ा करती है। इसलिए शंका नहीं करनी चाहिए।

शंका रखने से तो तेरा भाव बिगड़ता है, तूने उसमें हाथ डाला, इसलिए वह दुःख ही देगी। शंका उत्पन्न नहीं होने देनी है, सावधानी रखनी चाहिए, शंका हुई कि 'मृत्यु' आई समझो! शंका तो भयंकर अज्ञानता है।

शंका हो तब वह संताप में ही रहता है। भयंकर दुःखी रहता है, अपार दुःख होते हैं उसे। क्योंकि भगवान ने कहा है कि 'शंका ही सब से बड़ा गुनाह है' और वह उसे तुरंत ही दुःख देता है। वह शंका सामनेवाले को भी दुःख देती है। लोग दुःखी हैं, इसका कारण शंका ही है। निरा दुःख, दुःख और दुःख ही है। इसलिए मैं इस बात को समझने के लिए कह रहा हूँ न, कि समझो, समझो, समझो!

आक्षेप, कितने दुःखदाई

सभी कुछ तैयार है लेकिन भोगना नहीं आता, भोगने का तरीका नहीं आता। मुंबई के सेठ बड़े

टेबल पर खाना खाने बैठते हैं, लेकिन खाना खाने के बाद, 'आपने ऐसा किया, वैसा किया तू यों ही मेरा दिल जलाती रहती है!' अरे! यों ही कोई जलाता होगा? न्यायपूर्वक जलाता है। बिना न्याय के तो कोई जलाता ही नहीं। ये लकड़ी को लोग जलाते हैं, लेकिन लकड़ी की अलमारी को कोई जलाता है? जो जलाने का हो उसे ही जलाते हैं। ऐसे आक्षेप देते हैं। यह तो भान ही नहीं है। मनुष्यपन सुध हो गया है, नहीं तो घर में तो आक्षेप दिए जाते होंगे? पहले के समय में घर के व्यक्ति एक-दूसरे पर आक्षेप नहीं लगाते थे। अरे, लगाना हो तब भी नहीं लगाते थे। मन में ऐसा समझते थे कि आक्षेप लगाऊँगा तो सामनेवाले को दुःख होगा और कलियुग में तो चपेट में लेने को घूमते हैं। घर में मतभेद क्यों होना चाहिए? जिंदगी में मतभेद पड़े तो फिर किस काम का?

मतभेद के दुःख हैं मनुष्य को

हिंदुस्तान के लोग मतभेदों को मिटाने में लगे हैं। पहले तो आपके अंदर मतभेद नहीं होना चाहिए। यदि अंदर मतभेद हो गया तो घोटाला है, फिर टेन्शन होता है। उसके बाद कम्प्रेशन आता है। फिर कम्प्रेशन आता है न?

प्रश्नकर्ता : अंदर का मतभेद क्या है? उदाहरण देकर समझाइए।

दादाश्री : आप अगर किसी से बात करें, किसी को देखा तो आप कहो, 'आइए, आइए' और भीतर कहें, 'इस नालायक का क्या काम है?' भीतर फिर ऐसा बोलते हैं, ऐसा तृतीयम बोलते हैं। क्या कभी ऐसा होता है?

प्रश्नकर्ता : कभी क्या, लगभग हर बार हो ऐसा है। गलती से बात कर लेने के बाद ऐसा लगता है कि 'इन्हें कहाँ बैठा दिया।'

दादाश्री : जगह-जगह पर घरों में ऐसे ही

मतभेद, भीतर झगड़े-मतभेद रहते हैं। ये तो ज्ञान देने के बाद अब आपको कम हो गए। वर्ना पहले तो पूरे दिन भीतर झगड़े व बवाल चलते रहते थे। कोई कहेगा, 'अरे! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है कि घर में सब लोग मुझे डाँट रहे हो?' तो दूसरा कहेगा, 'आपने क्या बिगाड़ा है, वह आपको पता नहीं है?' क्या जीवन जीना भी नहीं आया? अकुलाहट में जीते हो? क्या तू अकेला है? तब कहता है, 'नहीं, शादीशुदा हूँ।' तो फिर वाइफ है, फिर भी तेरी अकुलाहट खत्म नहीं हुई? क्या अकुलाहट नहीं जानी चाहिए? मैंने तो ऐसा सब सोच रखा था। क्या लोगों को ऐसा सब नहीं सोचना चाहिए? बहुत बड़ा विशाल जगत् है, लेकिन ऐसा मान लिया है कि यह दुनिया खुद के रूम (कमरे) के अंदर ही है। उसे भी यदि दुनिया मान ले तो अच्छा है, लेकिन वहाँ भी 'वाइफ' (पत्नी) के साथ झगड़ता रहता है!

'मैं' और 'तू' के मतभेद से खड़े हैं दुःख

अब यह नासमझी नहीं है क्या? आपको क्या लगता है? यानी अभेदता टूट गई और भेद उत्पन्न हो गया इसलिए वाइफ के साथ भी 'मेरा-तेरा' हो जाता है। 'तू ऐसा है और तू वैसी है।' फिर वह कहती है, 'आप कहाँ सीधे हो?' यानी घर में भी 'मैं' और 'तू' हो जाता है।

'मैं और तू, मैं और तू, मैं और तू।' पहले 'हम' थे। 'हम दोनों एक हैं। हम ऐसे हैं, हम वैसे हैं, यह हमारा ही है।' उसमें से 'मैं और तू' हो गया। अब 'मैं' और 'तू' हो गया तो फिर तू तू-मैं मैं हो जाता है। फिर यह तू तू-मैं मैं कहाँ तक पहुँचता है? ठेठ हल्दीघाटी की लड़ाई शुरू हो जाती है। सर्व विनाश को आमंत्रित करने का साधन है तू तू-मैं मैं। इसलिए तू तू-मैं मैं तो किसी के साथ होने ही मत देना। संसार में कैसे रह सकते हैं, ऐसे फँसाववाले संसार में? जहाँ मैं और तू हो, वहाँ जी ही कैसे सकते हैं?

असमाधान उपजाए दुःख

घर में यदि वाइफ के साथ मतभेद हो जाए तो उसका समाधान करना नहीं आता, बच्चों के साथ मतभेद हो जाए तो उसका समाधान करना नहीं आता और उलझन में रहता है।

प्रश्नकर्ता : पति तो ऐसा ही कहेगा न कि, 'वाइफ समाधान करे, मैं नहीं करूँगा।'

दादाश्री : हाँ। यानी यदि 'वाइफ' समाधान करे और आप नहीं करो तो आपकी 'लिमिट' हो गई पूरी। पुरुषों को तो इतनी अच्छी तरह बोलना चाहिए कि 'वाइफ' प्रसन्न हो जाए। इस तरह गाड़ी आगे बढ़ा दे, जबकि आप तो पंद्रह-पंद्रह दिन, महीने-महीने तक गाड़ी को रोके रखते हो, ऐसा नहीं चलेगा। जब तक सामनेवाले के मन का समाधान नहीं हो जाता, तब तक आपके लिए परेशानी है। इसलिए उसका समाधान कर लेना चाहिए।

इस तरह घर में मतभेद हो जाएँगे, तो कैसे चलेगा? पत्नी कहती कि 'मैं आपकी हूँ' और पति कहता है कि 'मैं तेरा हूँ,' तो फिर मतभेद क्यों? जैसे-जैसे आप दोनों के बीच 'प्रॉब्लम' बढ़ेंगे वैसे-वैसे दूर होते जाएँगे। यदि प्रॉब्लम 'सॉल्व' हो जाए तो फिर दूरी नहीं होगी। प्रॉब्लम तो सभी को होगी, ऐसा नहीं है कि सिर्फ आपको ही होती हैं। जितने लोगों ने शादी की है, उनके बीच 'प्रॉब्लम' हुए बगैर रहती ही नहीं।

आग्रह-पकड़ से दिए दुःख

सच्ची (सही) व्यक्ति लोगों को बहुत दुःख दे देता है, इसलिए उसे भी दुःख आता है। सच्चा व्यक्ति 'मैं सच्चा हूँ' ऐसा करके सभी को बहुत दुःख दे देता है। इसलिए आग्रहपूर्वक नहीं बोलना चाहिए। आग्रहपूर्वक बोले, वह पोइजन! शास्त्रकारों ने कहा है कि बहुत अधिक आग्रह किया इसलिए

असत्य है और आग्रह नहीं किया इसलिए सत्य है। और सत्य को सत्य ठहराने जाओगे तो असत्य बनकर खड़ा रहेगा, ऐसे जगत् में सत्य ठहराते हो?

इसलिए सत्य-असत्य का झंझट रहने दो। वैसे झंझटवाले वहाँ कोर्ट में जाते हैं। लेकिन हम कोई कोर्ट में नहीं बैठे हैं। हमें तो यहाँ दुःख नहीं हो, वह देखना है। जिस सत्य को बोलते हुए सामनेवाले को दुःख होता हो तो हमें उसे बोलना ही नहीं आता।

आड़ाई करके, रूठकर दुःख देते हैं

हमारी दिल को ठंडक हो ऐसी बात हो, फिर भी स्वीकार नहीं करता, खुद के ही मत से चलता है। हम किसी से कुछ भी नहीं कहते, दबाव नहीं डालते। फिर भी यदि किसी से कुछ कहें और यदि वह नहीं माने तो उसे आड़ाई (अहंकार का टेढ़ापन) ही कहेंगे न? खुद के मत से ही चलना है न?

ये लोग तो कहेंगे, 'तेरी बनाई हुई चाय नहीं पीऊँगा।' ओहोहो, तो फिर किसकी बनाई हुई चाय पीएगा अब? पति ऐसे धमकाता है पत्नी को। क्या कहता है? 'तूने चाय बिगाड़ दी न, इसलिए अब कभी तेरे हाथ की चाय नहीं पीऊँगा।' धमकाता है बेचारी को, आड़ाई करता है।

बाकी तो, वह रूठ जाए तब आड़ाई करता है न! स्टेशन पर एक व्यक्ति की पत्नी रूठी हुई थी। उस व्यक्ति ने उसे कहा कि, 'गाड़ी में बैठ जा न! गाड़ी रवाना हो जाएगी। फिर रात हो जाएगी।' तब भी वह नहीं बैठी और उसे भी भटकना पड़ा। रूठे हुए व्यक्ति के सामने से तो बारह गाड़ियाँ चली जाती हैं। ज़रा सा उसे कुछ टेढ़ा लगा तो आड़ाई करती है। उसे बुरा लगना चाहिए बस! कितनी सारी आड़ाईयाँ! उसी वजह से दुःख पड़ते हैं न!

त्रागा करके सामनेवाले को मुसीबत में डालते हैं

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले से अपनी मनमानी करवाना आड़ाई में आता है ?

दादाश्री : और नहीं तो क्या ? आड़ाई नहीं तो और क्या है ? और वह रूठकर भी, अंत में त्रागा (अपनी बात मनवाने के लिए किए जानेवाला नाटक) करके भी अपनी मनमानी करवाता है। त्रागा आपने नहीं देखा ? आपको बुखार आ जाएगा, त्रागा देखोगे तो ! यदि सामनेवाला व्यक्ति त्रागा करे तो आपको बुखार नहीं चढ़नेवाला हो तो भी तीन डिग्री बुखार चढ़ जाए।

प्रश्नकर्ता : त्रागा क्या होता है ?

दादाश्री : त्रागा तो उसे कहते हैं कि सभी लोगों को इच्छा नहीं हो फिर भी दबना पड़े और हाँ में हाँ मिलानी पड़े। जैसे पुलिसवाले के वश में आ जाते हैं न, ऐसे वश में आ जाना पड़ता है। उसे त्रागा कहते हैं।

त्रागा यानी खुद ऐसा कुछ करता है कि सामनेवाला घबराकर फिर उसकी बात को 'एक्सेप्ट' कर ले। अपनी मनमानी करवाने के लिए कुछ भी करता है। सिर कूटता है, ऐसे करता है, हंगामा मचा देता है, रोता-धोता है। हमें हर तरह से डरा देता है, उसे त्रागा कहा जाता है। जब खुद की मनमानी नहीं होती तब त्रागा करते हैं। जो मनमानी करवाने के लिए किया जाता है उसे त्रागा कहते हैं। खुद की मनमानी करवाने के लिए, दूसरे सभी लोगों को डराने के लिए नाटक करना, वही त्रागा कहलाता है। अरे बवाल-बवाल !

इस कुदरत का कैसा है ? किसी भी जीव की किंचित्मात्र उसका मनमानी नहीं होने देती। लेकिन जिससे किसी को भी मन से, वाणी से या वर्तन से दुःख नहीं होता, उसे कुदरत धार्यु (मनमानी) करने की पूरी सत्ता दे देती है।

पागल अहंकार, सामनेवाले को दुःख दे देता है

प्रश्नकर्ता : ऐसा अहंकार कि वह खुद ही सही है, क्या उसी को खुद का धार्यु (मनमानी) करना कहा जाता है ?

दादाश्री : नहीं, वह धार्यु नहीं है, धार्यु तो बहुत लोग करते हैं। अहंकार पागल जैसा दिखे, उसे पागल अहंकार कहते हैं। व्यावहारिकता नहीं दिखती। ये सभी लोग व्यावहारिक काम करते हैं, उसमें किसी को गलत, किसी को पागल नहीं कहा जाता। लेकिन जिसे पागल जैसा कहा जाता है, लोग उसे अहंकार कहते हैं। दुनिया से कुछ अलग ही तरह का दिखाता है वह अहंकार।

प्रश्नकर्ता : खुद को पता नहीं चलता ?

दादाश्री : वह तो भान ही नहीं होता न कुछ ! पता चलने की तो बात ही कहाँ, लेकिन भान ही नहीं रहता न ! 'मैं क्या पागलपन कर रहा हूँ या मैं क्या बोल रहा हूँ', उसका भान ही नहीं रहता। तभी तो अहंकार ऐसा निकलता है। पचास लोग बैठे हों और यदि एक ने उल्टा किया तो लोग तुरंत कहेंगे, 'यह अहंकारी है, मुआ !' व्यावहारिकता ऐसी होनी चाहिए जो सभी लोगों को एक्सेप्ट हो, कबूल हो। हम जो कुछ भी करें, तब सभी लोग कहें कि 'अच्छा काम किया आपने।' अहंकार कैसा होना चाहिए ? अहंकार ऐसा होना चाहिए कि लोग एक्सेप्ट करें। यह तो जो पागल अहंकार होता है, वह लोगों को पसंद नहीं आता।

यहाँ दूसरी सब बातें हैं न कि 'मैं ऐसा कर दूँगा और वैसा कर दूँगा' अब उससे कुछ हो तो सकता नहीं लेकिन अहंकार बोलता है। ऐसे सारे पागल अहंकार ही भर रखे हैं। जो व्यक्ति कुछ कर सकता है, वह अहंकार भी नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा कैसे पता चलेगा कि यह पागल अहंकार है ?

दादाश्री : सभी जगह पागल अहंकार है और उसे मस्ती में भटकाता है। उसे पहचान लेना है। मुझसे कोई कहे कि 'दादाजी, आप बेअकल हैं,' तो मैं समझ जाता हूँ, वहाँ मेरा पागल अहंकार खड़ा नहीं होता, इसलिए मुझे दुःख होता ही नहीं न! उसका अहंकार उसे दुःख देगा, वह मुझे क्या दुःख देगा? जो दुःख दे, वह सारा पागल अहंकार।

पगला अहंकार सीधे को भी उल्टा दिखाता है

हर एक में पागल अहंकार होता है। वह पागल अहंकार सुल्टे को उल्टा दिखाता है। पागल अहंकार तो, घर की जो आपकी छः-सात 'फाइलें' हैं न, उन सातों फाइलों का उल्टा ही दिखलाता है। वीतराग विज्ञान कहता है कि घरवालों की प्रकृति को जीत लो। जीत लो यानी? वे सभी आप पर बहुत राज़ी हों। अतः उन्हें दुःख न हो, इस तरह से जीतो। बाहर की दुनिया को नहीं जीतना है, आपके घर की जो सात फाइलें हैं, उन्हें जीत लो। दुनिया को जीता हुआ ही है। अपनी फाइल को छोड़कर भाग गए और साधु बन गए, तो कुछ नहीं हो सकता। उस फाइल को जीतना पड़ेगा। वह फाइल आपके लिए ही आई है।

पागल अहंकार तो बहुत बुरा काम करता है। कुछ समझने ही नहीं देता। सिर्फ उल्टा ही सोचता रहता है। फाइलों के दोष देखता है और खुद को सही देखता है कि 'मैं बहुत सयाना हूँ।' इस तरह खुद के दोषों का बचाव करे। खुद अपने आप से कहे कि 'आपका दोष नहीं है।' यानी अपने आप ही बचाव कर लेता है। वकील भी वही, जज भी वही और आरोपी भी वही। बोलो, क्या दशा होगी? खुद आरोपी हो, खुद वकील हो और खुद ही जज हो तो कैसा जजमेन्ट आएगा? इसमें तो सामनेवाले को गुनहगार देखा और खुद का बचाव किया!

अटैक और रक्षण से देते हैं दुःख

प्रकृति का रक्षण करने की बात तो है ही, लेकिन बल्कि अटैक भी कर देता है। सामनेवाले पर प्रहार भी कर देता है। यह सब से बड़ा *पोतापणां* (मैं हूँ और मेरा है ऐसा आरोपण, मेरापन) निकालना है न! प्रकृति का रक्षण करना वह *पोतापणुं* है। अपने महात्मा रक्षण करते होंगे क्या? इसीलिए तो सहज नहीं हो पाते। ये तो, ज़रा सा अपमान होने से पहले तो रक्षण कर देते हैं। कुछ भी करने जाएँ तो रक्षण करते हैं। ये सब चीज़ें सहजपना आने ही नहीं देतीं न! 'अटैकवाला' चला जाए तो उसके बाद रक्षणवाला आएगा। तब वास्तविक *पोतापणां* कहलाता है वना तब तक तो उसे हिंसकभाव ही कहा जाता है। और जब 'अटैकवाला' *पोतापणां* छूटे तब रक्षणवाला *पोतापणां* छूटने की शुरूआत होती है। किसी को दुःख हो जाए ऐसा *पोतापणां* किस काम का?

दखलवाले अहंकार से दुःख होता है

चलती गाड़ी में दखल नहीं करनी चाहिए। अपने आप ही वह चलती रहेगी। कोई रुकेगी नहीं।

प्रश्नकर्ता : 'इन्टरफियर' किया ऐसा कहते हैं, वही दखल का अर्थ है?

दादाश्री : 'इन्टरफियर' तो होना ही नहीं चाहिए। उसे दखल ही कहा जाएगा। दखल होती है, तब गड़बड़ हो जाती है। जो चल रहा है उसे चलते रहने देना पड़ेगा। अपनी यह ट्रेन चल रही हो, और उसमें कुछ खटक-खटक हो रहा हो तो उस घड़ी हमें जंजीर खींचकर शोर मचाना चाहिए? नहीं, उसे चलते ही रहने देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यह ज़रा चूँ-चूँ बोल रही हो तो भी नीचे फिर ऑइल डालने जाता है।

दादाश्री : हाँ, जाता है। दखल करने की

ज़रूरत नहीं है। क्या चल रहा है, उसे 'देखते' रहना है। और हम यदि दखल करें, तो हमारी क्या दशा होगी? जो हो रहा है उसे चलने देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : गलत हो तो भी चलने दें?

दादाश्री : आप क्या गलत और सही को चलानेवाले थे? मनुष्यों में चलाने की शक्ति ही नहीं है। यह तो झूठा अहंकार करता है कि मैं गलत चलने ही नहीं दूँगा, बल्कि उससे तो झगड़े होते हैं, दखलें होती हैं। किसी से गलत हो रहा हो तो हमें उसे समझाना चाहिए, या फिर मौन रहना चाहिए।

कुचलते हैं हृदय को धमकाकर, सत्ता का उपयोग करके

प्रश्नकर्ता : सामनेवाला टेढ़ा हो तो जैसे के साथ तैसा नहीं होना चाहिए?

दादाश्री : सामनेवाले व्यक्ति का हमें नहीं देखना चाहिए, वह उसकी ज़िम्मेदारी है, यदि लुटेरे सामने आ जाएँ और आप लुटेरे बनो तो ठीक है, लेकिन वहाँ तो सबकुछ दे देते हो न? निर्बल के आगे सबल बनो उसमें क्या? सबल होकर निर्बल के आगे निर्बल हो जाओ तो सही।

यह तो सत्तावाला अपने से नीचेवालों को कुचलता रहता है। जो सत्ता का दुरुपयोग करता है, उसकी सत्ता चली जाती है और ऊपर से मनुष्य जन्म नहीं आता। एक घंटा ही यदि अपनी सत्ता में आए हुए व्यक्ति को धमकाया जाए तो सारी ज़िंदगी का आयुष्य बंध जाता है।

तरछोड़ से मन में से खून निकलता है।

संसार में यदि सुखी होने की इच्छा हो तो किसी को तरछोड़ (तिरस्कार सहित दुत्कारना) मत मारना। तरछोड़ किसे मारते हो? भगवान को ही। क्योंकि हर एक के भीतर भगवान बैठे हुए हैं। मनुष्य को गाली नहीं पहुँचती, भगवान को पहुँचती है। संसार के सभी परिणाम भगवान स्वीकार करते

हैं, इसलिए वे परिणाम ऐसे लाना कि भगवान स्वीकार करें तो वहाँ अपना खराब नहीं दिखे, एक जीव को भी तरछोड़ मारकर कोई मोक्ष में नहीं जा सकता।

तरछोड़ तो बहुत ही खराब चीज़ है। तलवार से तो देह में से खून निकलता है लेकिन तरछोड़ से तो मन में से खून निकलता है। तरछोड़ सामनेवाले के सारे दरवाज़े बंद कर देती है। जिसे आपने तरछोड़ लगा दी होगी न, तो वह अपना दरवाज़ा कभी भी नहीं खोलेगा। वह क्या कहेगा कि 'सब को आने दूँगा, लेकिन तुझे नहीं आने दूँगा।' यदि अपनी लगाई हुई तरछोड़ के लिए उससे क्षमा माँग लें न, तो यह सब खत्म हो जाएगा।

देखो न, ये जीवन है लेकिन लड़ते रहते हैं... आमने-सामने लड़ते ही हैं। दिखाई दें ऐसे झगड़े नहीं करते। अंदर (मन में) झगड़े करनेवाले बाहर लड़ाई नहीं करते। बाहर की लड़ाई तो एकावतारी होती है। एक जन्म में वह शून्यता को प्राप्त कर लेगी जबकि अंदर की लड़ाई तो सौ-सौ जन्मों तक चलती रहती है।

खुद का ध्येय तो लक्ष्य में रहना चाहिए न

यह जगत् बैर से खड़ा है। यदि किसी को धमकाकर आप जीत जाते हो तो उसे जीतना नहीं कहते। बाकी, हल तो सारा नम्रता से ही आएगा। वीतराग कितने समझदार थे! यदि छोटा बच्चा धमकाए तो भी उसके साथ खुश होकर बात करते थे। क्योंकि खुद को मुक्ति चाहिए, मोक्ष में जाना है, फिर से इन्हीं लोगों के साथ कहाँ बैठे रहना है। खुद का काम तो लक्ष्य में रहना चाहिए या नहीं? खुद का ध्येय तो लक्ष्य में रहता ही है न? और इसी वजह से हल लाना चाहिए। वर्ना यदि आपके धमकाने पर अभी वह दब जाए तो वास्तव में वह अंदर से नहीं दबता। लेकिन वह अंदर संभालकर रखता है, बैर बाँध लेता है।

टेढ़ा (इंसान) बाँधे बैर लाख जन्मों का

कोई जैसा-तैसा बोले, लेकिन उस घड़ी यदि हम जवाब दे दें, फिर वह जवाब भले ही कितना भी सुंदर हो, लेकिन थोड़ा सा भी स्पंदन पहुँचे तो भी नहीं चलेगा। सामनेवाले को सबकुछ ही बोलने की छूट है, वह स्वतंत्र है। अभी वे बच्चे यदि ढेला फेंके तो उसमें वे स्वतंत्र नहीं है? पुलिसवाला जब तक रोके नहीं, तब तक स्वतंत्र ही है। सामनेवाला जीव तो, जो चाहे वह करे। टेढ़ा चले और बैर रखे तो वह लाख जन्मों तक मोक्ष में नहीं जाने देगा! इसीलिए तो हम कहते हैं कि 'सावधान रहना। टेढ़ा मिले तो जैसे-तैसे करके, भाई साहब करके भी छूट जाना! इस जगत् से छूटने जैसा है।'

इस जगत् में सिर्फ बैर नहीं रखना है किसी के साथ। सामनेवाला गलत बोले तो भी आपको लेट गो करना है लेकिन बैर नहीं रखना। वर्ना मरने के बाद भी छोड़ेगा नहीं।

समाधान करवा के भी हल लाओ

यदि किसी को भी ज़रा सा भी परेशान किया तो वह खुद बदला लेने के लिए *नियाणां* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक चीज़ पर काम करना) कर लेता है कि ये लोग कैसे है कि 'भले ही मेरा पूरा तप इसमें लग जाए लेकिन इसे तो खत्म कर दूँगा।' ऐसा *नियाणां* कर लेते हैं इसलिए बैर मत बाँधना। यदि आप से गलती हो जाए तो माफी माँग लेना और उस चीज़ का हल ले आना, लेकिन केस का निबेड़ा ले आना। यह जगत् बैर से खड़ा है। इसलिए अगर किसी के साथ बैर बंध जाए तो आप उससे क्षमा माँगकर, उसके पैरों पड़ में पड़कर भी उससे माफी माँग लेना लेकिन उसके साथ बैर मत बाँधना और उसके साथ के बैर में से छूट जाना ताकि वह व्यक्ति खुश हो जाए कि 'हाँ भाई, अब हर्ज नहीं है।' उसके साथ समाधान कर लेना, ताकि आपको रोके नहीं।

प्रश्नकर्ता : यानी सोल्यूशन ले आने की इच्छावाले यदि ऐसा कबूल कर ले तो समाधान हो जाएगा?

दादाश्री : हाँ। अरे! 'हम तो पागल हो गए हैं', ऐसा भी कहते हैं। 'हमारा दिमाग़ ज़रा घूम गया है' कह दोगे तो वह आपको छोड़ देगा। आपको क्या उसके साथ शादी करनी है? यानी समाधान करवाकर आगे बढ़ जाना है। आपको तो इतना ही चाहिए न कि किसी भी तरह से बैर न बंधे!

दुःख देने पर बैर बंधने में देर नहीं लगती

यह जगत् ऐसा है कि यदि अच्छी तरह से बात-चीत करेंगे तो वह आपको आगे बढ़ने देगा वर्ना यदि उसे छोड़ोगे न तो भी वह जाने नहीं देगा और 'तू भी मेरे जैसा बन जा' कहेगा। ये तो घड़ीभर में बैर बाँध लेते हैं। इन्हें बैर बाँधते देर ही नहीं लगती।

प्रश्नकर्ता : इस जगत् में बैर न बंधे, ऐसी एकाध जगह तो बताइए।

दादाश्री : बैर बंधे ही नहीं इस तरह का बर्ताव करना चाहिए। मैं तो उसी तरह बर्ताव करता हूँ कि बैर नहीं बंधे।

प्रश्नकर्ता : यानी खुद नुकसान उठाकर भी बैर छोड़ देने हैं?

दादाश्री : हाँ। चाहे कैसे भी, नुकसान उठाकर, फँसकर लेकिन बैर नहीं बंधे इस तरह बर्ताव करना है। मैं तो शुरू से ऐसा ही बर्ताव करता था। हमारे किसी के भी साथ मतभेद नहीं हुए हैं। इसकी वजह क्या है? नोबिलिटी ऑफ़ माइन्ड, नुकसान उठाकर भी बैर नहीं बंधने देते। जबकि लोग तो क्या करते हैं? यदि नुकसान हुआ तो उसके साथ संबंध ही तोड़ लेते हैं और फिर किसी और के साथ संबंध जोड़ लेते हैं। दो सौ रुपये के नुकसान की खातिर

उसके साथ संबंध तोड़ देते हैं और यों निरे बैर बाँध लेते हैं। दौ सौ रुपये तो फिर से मिल जाएँगे, लेकिन इस तरह ये सारे संबंध बिगाड़ना तो भयंकर गुनाह है।

उठा लो यह अंतिम मौका

जिस चीज़ से ठगे गए वह चीज़ तो पड़ी रहेगी और लोगों के साथ व्यर्थ बैर बाँधने। यदि किसी के दो रुपये आपके पास हों तो उसे जिंदगीभर याद आता रहता है कि मेरे दो रुपये लेने बाकी हैं। अब इसका क्या कर सकते हैं? जिंदगीभर जी उसी में लगा रहता है। और उन दिनों तो दो रुपये की क्रीमत आज के जैसी नहीं थी (उस ज़माने में)। मेरे कहने का मतलब यह है कि जगत् से धोखा खाकर भी मोक्ष में चले जाने जैसा है क्योंकि बुरा वक्त आ रहा है। इसके बाद तो अस्सी हजार सालों तक तो इंसान को ऊपर देखने का भी वक्त नहीं मिलनेवाला, इतने भयंकर दुःखों और यातनाओं में रहेंगे सभी। इसलिए हम कहते हैं न कि, सावधान, सावधान! कहा है न कि, 'उठा लो यह अंतिम मौका...।'

किसी को दुःख न हो वही सब से बड़ा सिद्धांत

यह तो खुद का 'इगोइज़म' है कि 'यह मेरा सही है और दूसरे का गलत है।' व्यवहार में जो 'सही-गलत' कहा जाता है, वह सब 'इगोइज़म' है। फिर भी व्यवहार में कौन सा सही या गलत? जो चीज़ें मनुष्यों के लिए या किसी जीव के लिए नुकसानदायक हैं, उन्हें हम गलत कहते हैं। व्यवहार के लिए नुकसानदायक हैं, सामाज के लिए नुकसानदायक हैं, जीवों के लिए नुकसानदायक हैं, छोटे जीवों के लिए या दूसरे जीवों के लिए नुकसानदायक हैं, उन सब को गलत कहा जाता है।

मतलब व्यवहार सत्य किसे कहा जाता है

कि किसी जीव को नुकसान नहीं हो उस तरह से चीज़ें ले, चीज़ें ग्रहण करे, किसी जीव को दुःख नहीं हो वैसी वाणी बोले, किसी जीव को दुःख नहीं हो वैसा वर्तन हो तो वह मूल सत्य है। व्यवहार का मूल सत्य यही है। इसलिए यही सब से बड़ा सिद्धांत है कि किसी को दुःख नहीं हो। वाणी से दुःख नहीं हो, वर्तन से दुःख नहीं हो और मन से उसके लिए खराब विचार नहीं किए जाएँ, वही सब से बड़ा सत्य है, व्यवहार सत्य है, वह भी फिर वास्तव में 'रियल' सत्य नहीं है। यह चरम व्यवहार सत्य है!

मानसिक दुःख देना आत्महिंसा है।

इसलिए किसी जीव को त्रास नहीं हो, किसी जीव को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो (ऐसा रखना)। किसी जीव की ज़रा सी भी हिंसा हो, वैसा नहीं होना चाहिए। और किसी भी इंसान के लिए एक ज़रा सा भी खराब अभिप्राय नहीं होना चाहिए। दुश्मन के लिए भी अभिप्राय बदल गया, तो वह बड़ी हिंसा है। घर के लोगों के साथ चिढ़ना, वह बकरा मारो उससे भी बड़ी हिंसा है। क्योंकि चिढ़ना वह आत्मघात है।

इसलिए भगवान ने तो क्या कहा था कि पहले, खुद को कषाय नहीं हो ऐसा करना। क्योंकि ये कषाय, वे सब से बड़ी हिंसा हैं। किसी को मानसिक दुःख देना, किसी पर क्रोध करना, गुस्सा होना, वह आत्म हिंसा कहलाती है, भावहिंसा कहलाती है। अन्जाने में द्रव्यहिंसा हो जाए तो भले हो, लेकिन भाव हिंसा नहीं होने देना। तब लोग द्रव्य हिंसा रोकते हैं, लेकिन भाव हिंसा चालू रहती है।

रखो भाव में अहिंसा

भाव अहिंसा यानी 'मुझे किसी भी जीव को मारना है,' ऐसा भाव कभी भी नहीं होना चाहिए

और 'किसी भी जीव को मुझे दुःख देना है,' ऐसा भाव उत्पन्न नहीं होना चाहिए। 'मन-वचन-काया से किसी जीव को किंचित्मात्र दुःख न हो,' ऐसी भावना ही सिर्फ करनी है। क्रिया नहीं भावना ही करनी है। क्रिया में तो तू किस तरह बचानेवाला है? श्वासोश्वास में कितने ही लाखों जीव मर जाते हैं और यहाँ जीवों की टोलियाँ टकराती हैं वे टकराने से ही मर जाते हैं। क्योंकि हम तो उनके लिए बड़े-बड़े पत्थरों जैसे दिखते हैं। उन्हें ऐसा होता है कि यह पत्थर मुझ से टकराया।

नक्की करो पहुँचना है अंतिम सीढ़ी तक

पूरा जगत् चार प्रकार के भावों में रमा हुआ है।

१) हिंसक भाव २) पीड़ाकारक भाव ३) तिरस्कार भाव ४) अभाव भाव।

हिंसक भाव अर्थात् किंचित्मात्र भी हिंसा अथवा किसी का नुकसान करने का, किसी पर गुस्सा होने का, दुःख दे देने का, पीड़ा देने का वगैरह के भाव। पहले वे खत्म हो जाने चाहिए। हिंसकभाव खत्म होने के बाद पीड़ाकारक भाव खत्म हो जाने चाहिए। उच्च ज्ञाति में हिंसकभाव खत्म हो गए हैं और पीड़ाकारक भाव बचे हैं। पूरे दिन कषाय करते हैं। वे खत्म हो जाने चाहिए। मनुष्यों में तिरस्कार तो स्वभाविक तौर पर रहता ही है। जिसमें राग होता है, उसमें द्वेष होता ही है। द्वेष यानी तिरस्कार। तिरस्कार भाव खत्म होने के बाद, चौथा अभाव भाव खत्म हो जाना चाहिए। अभाव भाव यानी खुद के दोष तो खत्म हो चुके होते हैं लेकिन सामनेवाले की भूल के कारण खुद को अभाव हो जाता है। यह कितना बड़ा गुनाह कहलाएगा? 'महात्मा' चौथी 'स्टेज' में पहुँच जाने चाहिए।

ये चार सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद भगवान महावीर

पाँचवी सीढ़ी (वीतराग की) चढ़े थे, वह 'वीतराग विज्ञान' का अंतिम 'प्लेटफॉर्म' है!

नक्की करने योग्य 'प्रोजेक्ट'

मनुष्यों को जीवन जीना भी नहीं आया, जीवन जीने की चाबी ही खो गई है। लोग फिजूल मार खाते रहते हैं। इस जगत् में आपका कोई बाप भी ऊपरी (बाँस, वरिष्ठ) नहीं है, आप संपूर्ण स्वतंत्र हो। आपका प्रोजेक्ट भी स्वतंत्र है, लेकिन आपका प्रोजेक्ट ऐसा होना चाहिए कि किसी भी जीव को आपसे किंचित्मात्र दुःख न हो। आपका प्रोजेक्ट बहुत बड़ा करो, सारी दुनिया जितना करो।

प्रश्नकर्ता : ऐसा संभव है ?

दादाश्री : हाँ, मेरा (प्रोजेक्ट) बहुत बड़ा है। किसी भी जीव को दुःख न हो उस तरह से मैं रहता हूँ। मैं किसी को भी दुःखी करने के लिए नहीं आया। हम तो सुखी करने के लिए आए हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दूसरों के लिए तो वह संभव नहीं है न ?

दादाश्री : संभव नहीं, लेकिन उसका अर्थ ऐसा नहीं कि सब जीवों को दुःख देकर अपना प्रोजेक्ट करो।

मनुष्यों को दुःखी तो करना ही नहीं चाहिए। आपको लगता है कि उसकी नासमझी है, लेकिन वह तो उसे समझ ही मान बैठा है न! उसे आप दुःख कैसे दे सकते हो? ऐसा कोई नियम तो रखना चाहिए न कि किसी को कम से कम दुःख हो? ऐसा प्रोजेक्ट कर सकते हैं न। मैं आपको जो बिल्कुल असंभव है, वह करने को तो नहीं कहता न! लोग तो कैसे हैं कि कार्य रूप में आज दुःख उत्पन्न होता है, फिर भी वैसे के वैसे दुःख के कारणों को बार-बार खड़े करते हैं। पिछले दुःख के कारणों से जो दुःख आता है उसमें नये कारण खड़े नहीं होने दें, वह काम का है।

दुःखी ही दुःख दे देता है

जब तक अंदर सुख हो तब तक इंसान किसी का कुछ नहीं बिगाड़ता। दुःखी इंसान ही औरों का बिगाड़ता है। जो दुःखी होता है वह किसी और को परेशान करता है। सुखी व्यक्ति तो सभी को सुख देने का प्रयत्न करता है।

प्रश्नकर्ता : खुद को सुख नहीं हो, तो फिर वह दूसरों को सुख कैसे दे सकेगा?

दादाश्री : इसीलिए नहीं दे सकता न, लेकिन कोई ऐसा मनुष्य हो, करोड़ों में एकाध मनुष्य, वह खुद का सुख दूसरों को दे देता है, वह देवगति में जाता है। पहले तो ऐसे बहुत लोग थे। सौ में से दो-दो, तीन-तीन प्रतिशत, पाँच-पाँच प्रतिशत थे। अभी तो करोड़ों में दो-चार निकलेंगे। अभी तो दुःख नहीं दे तो भी समझदार कहलाएगा। दूसरों को बिल्कुल भी दुःख नहीं दे तो फिर से मनुष्य में आता है।

क्रोध-मान-माया-लोभ ऐसे होने चाहिए कि जो औरों के लिए दुःखदाई नहीं बन जाए। अन्य किसी को भी दुःखदाई नहीं बन जाए ऐसे क्रोध-मान-माया-लोभ होने चाहिए। अन्य किसी को भी दुःखदाई नहीं, सिर्फ खुद के लिए दुःख रहे। अगर इतनी लिमिट (सीमा) में रहे तो, मोक्षमार्ग वहाँ तक का है।

दुःख देकर कोई भी मोक्ष में नहीं जा सकता

हमसे किसी को किंचित्मात्र दुःख हो जाए, तब (कुदरत की) कोर्ट में फिर केस चलता रहेगा! जब तक कोर्ट में झगड़े हैं, तब तक छूटेंगे नहीं। ये कोर्ट के झगड़े में आए हुए लोग हैं। अब कोर्ट के झगड़े मिटाने हों, तो हमें किसी ने गाली दी हो तो उसे छोड़ देना है और हमें किसी को भी गाली नहीं देनी है। क्योंकि यदि हम दावा करेंगे, तब भी फिर केस चलता रहेगा। हम फौजदारी

करेंगे तो वापस वकील ढूँढने जाना पड़ेगा। अब हम यहाँ से मुक्त हो जाना है। यहाँ अच्छा नहीं लगता, इसलिए हमें रास्ता निकालना है, सबकुछ छोड़ देना है!

किसी को किंचित्मात्र दुःख हो तो कोई जीव मोक्ष में नहीं जा सकता, फिर वे साधु महाराज हों या चाहे जो हों। सिर्फ शिष्य को ही दुःख होता हो, तब भी महाराज को यहाँ पर रुके रहना पड़ेगा, चलेगा ही नहीं!

जबकि अज्ञानी तो सभी को दुःख ही देता है। दुःख नहीं देता हो फिर भी भाव तो भीतर दुःख के ही बरतते रहते हैं। 'अज्ञानता है वही हिंसा है और ज्ञान, वह अहिंसक भाव है।'

एक जन्म के लिए सभी के दुःख ले लो

यदि ऐसा वातावरण खड़ा करें कि किसी को दुःख हो जाए तो आपको भी क्लेश उत्पन्न हो जाएगा। किसी को थोड़ा सा भी दुःख दे, तो वह जागृत किस तरह कहा जाएगा? क्लेश रहित भूमिका करनी, उसे बहुत बड़ा पुरुषार्थ किया कहा जाता है। बाहर किसी को भी दुःख दोगे तो आपके अंदर (खुद को) भी दुःख शुरू हो जाएगा। ऐसा इन वीतरागों का साइन्स है। एक जन्म के लिए सभी के दुःख ले लो तो अनंत जन्मों का हिसाब बराबर (चूकते) हो जाएगा।

जैसे-तैसे करके हल लाओ

जिसे मोक्ष में जाना है उसके लिए 'ऐसा करना चाहिए या वैसा नहीं करना चाहिए,' ऐसा नहीं होना चाहिए। जैसे-तैसे करके बात खत्म करके चलते बनना है। उसे पकड़कर नहीं रखता, जैसे-तैसे करके हल लाता है।

रियल धर्म अर्थात् ध्येय तक पहुँचना

किसी को दुःख देकर हम सुखी नहीं रह

सकते! जगत् के जीव मात्र में भगवान रहे हुए हैं। इसलिए किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी त्रास दोगे, दुःख दोगे तो अधर्म उत्पन्न होगा और यदि किसी भी जीव को सुख दोगे तो धर्म उत्पन्न होगा। अधर्म का फल आपकी इच्छा के विरुद्ध है और धर्म का फल आपकी इच्छानुसार है।

धर्म अर्थात् भगवान की मूर्तियों के पास बैठे रहना धर्म नहीं कहलाता। धर्म तो, अपने ध्येय तक पहुँचने (को कहते) हैं। ओब्लाइजिंग नेचर (परोपकारी स्वभाव) रखो, तय करो कि अब मुझे लोगों को ओब्लाइज ही करना है अब, तो आपमें परिवर्तन आ जाएगा। निश्चित करो कि मुझे वाईल्डनेस (जंगलियत) करनी नहीं है।

सामनेवाला वाईल्ड (जंगली) हो जाए, फिर भी मुझे नहीं होना है, तो ऐसा हो सकता है। नहीं हो सकता? निश्चित करो तब से थोड़ा-थोड़ा परिवर्तन होगा कि नहीं होगा?

प्रश्नकर्ता : मुश्किल है लेकिन।

दादाश्री : ना! मुश्किल हो, फिर भी नक्की करें न, क्योंकि आप मनुष्य हो और भारत देश के मनुष्य हो। ऐसे-वैसे हो? ऋषि-मुनियों के पुत्र हो आप! (भीतर अनंत) शक्तियाँ आपके पास पड़ी हुई हैं। वे आवृत होकर पड़ी हुई हैं, वे आपके क्या काम आएँगी? इसलिए आप मेरे इस शब्द के अनुसार यदि तय करो कि मुझे यह करना ही है, तो वह अवश्य फलेगी, आपको जो-जो शक्तियाँ माँगनी हों, वे इन दादा से रोज़ सौ-सौ बार माँगना, सब मिलेंगी।

निश्चय अनुसार परिणाम जरूर आएगा

संसार में इस तरह जीना चाहिए कि आप किसी के लिए दुःखदाई न बन जाओ। आप से किसी को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं हो यह सब से बड़ा ध्येय रखना चाहिए।

यदि आप से किसी को भी दुःख हो जाएगा तो उसका तो मोक्ष रुक ही गया लेकिन वह आपका मोक्ष भी रोक देगा। इसलिए किसी को भी दुःख नहीं देना चाहिए। ऐसी आशा कभी मत रखना कि किसी को दुःख देकर किंचित्मात्र भी सुखी हो सकते हैं। यानी सभी को सुख कैसे बरते (आए) यह देखना है, और कुछ नहीं देखना है।

किसी को भी दुःख नहीं देने की दृष्टि आज से ही नक्की कर लो कि इस जगत् में मुझे किसी को ज़रा सा भी दुःख नहीं देना है। मन-वचन-काया से किंचित्मात्र तकलीफ नहीं देनी है, ऐसा नक्की करोगे न तो अंदर ऐसा ही चलता रहेगा। जैसा आप नक्की करते हो वैसा अंदर चलता है। जैसा आपका निश्चय होगा, वैसा चलेगा।

शक्ति माँगकर, करें हम भावशुद्धि

अब आपको जो भी उल्टे (गलत) विचार आएँ, उन्हें मिटा देना है और यह भावना रखनी है कि जगत् का कल्याण हो। अपने भाव ऐसे होने चाहिए कि इस जगत् में अपने मन-वचन-काया से किसी जीव को किंचित्मात्र दुःख न हो। इस जगत् में किसी भी जीव को किंचित्मात्र दुःख नहीं देने की भावना रहे, तभी कमाई कहलाती है।

अंत में आपकी शुद्धता चाहिए

अब आपको निर्दोष दृष्टि प्राप्त हो गई है, इसलिए किसी का भी दोष नहीं निकालना चाहिए। दोष निकालकर क्या करना है? दोष निकालकर कोई सुखी हुआ है? कोई सुखी हो सकता है क्या?

आपके दोष एक के बाद एक आपको दिखने लगे उसी को 'कमाई करना' कहते हैं। यह सारा ही सत्संग खुद, खुद के सभी दोष देखे उसके लिए है और खुद के दोष दिखें, तभी वे दोष जाएँगे। दोष

दादावाणी

कब दिखेंगे? जब खुद 'स्वयं' होंगे, 'स्व-स्वरूप' होंगे तब। जिसे खुद के दोष ज़्यादा दिखें, वही बड़ा है। जब इस देह के लिए, वाणी के लिए, वर्तन के लिए संपूर्ण निष्पक्षपात उत्पन्न होता है तभी खुद, खुद के सभी दोष देख सकता है।

आप जिस चीज़ के लायक होंगे, वह चीज़ आपको घर बैठे मिल जाएगी इसलिए आप में शुद्धता होनी चाहिए। आपकी शुद्धता में क्या होना चाहिए? इस जगत् के किसी भी जीव को मुझ से दुःख न हो और यदि मुझे कोई दुःख दे जाए तो वह हिसाबवाला है। 'हमसे किसी भी जीव को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो' इतना ही वाक्य समझ गया न, तो बहुत हो गया।

भावना करके, कर लो स्व-कल्याण

इसलिए हम सभी से कहते हैं कि भाई! सुबह पहले बाहर निकलते समय और कुछ नहीं आता हो तो इतना बोलना कि 'मन-वचन-काया से इस जगत् में किसी भी जीव को किंचित्मात्र दुःख न हो।' ऐसे पाँच बार बोलकर निकलना। फिर दूसरी सारी ज़िम्मेदारी मैं ले लेता हूँ। बाकी ज़िम्मेदारी मेरी! जा, दूसरा कुछ नहीं आएगा तो मैं देख लूँगा! इतना बोलना न! फिर किसी को दुःख हो गया, वह मैं देख लूँगा। पर इतना तू बोलना। इसमें हर्ज हैं?

प्रश्नकर्ता : इसमें कोई हर्ज नहीं है।

दादाश्री : तू बोलना ज़रूर। तब अगर वह

कहे कि 'मुझसे दुःख दे दिया जाए तो?' 'वह तुझे नहीं देखना है। वह मैं (कुदरत की) हाई कोर्ट में सब कर लूँगा। वह वकील को देखना है न? वो मैं कर दूँगा सब।' तू मेरा यह वाक्य बोलना न सुबह में पाँच बार! हर्ज है इसमें? कुछ कठिनाई है इसमें? सच्चे दिल से 'दादा भगवान' को याद करके बोलोगे न, फिर हर्ज क्या है?

सच्चे हृदय से, दादा से शक्ति माँगो

इसे पाँच बार तो बोलना है लेकिन इस तरह बोलना चाहिए कि पैसे गिनते वक्त जैसी स्थिति होती है, उस तरह से बोलना चाहिए (एक चित्त से)। कैसे बोलना चाहिए। रुपये गिनते वक्त जहाँ होता है, ऐसा रखना चाहिए। रुपये गिनते वक्त जैसा अंतःकरण होता है, बोलते वक्त भी वैसा ही रखना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : हम ऐसा ही करते हैं।

दादाश्री : बस, वही करना। दूसरा कुछ करने जैसा नहीं है, इस दुनिया में। 'मन-वचन-काया से किसी जीव को किंचित्मात्र दुःख न हो' तो पूरा बहीखाता साफ। हम आपको ऐसा समझा रहे हैं। जिस समझ से हम छूट सके हैं, जिस समझ से हम बंधन मुक्त हो गए हैं, जिस समझ से सत्ताईस सालों से हमें टेन्शन नहीं लगता, जिस समझ से हम इन्डिपेनडेंट (स्वतंत्र) हो गए हैं, वही समझ आपको सिखा रहे हैं।

- जय सच्चिदानंद

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वीं तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं., पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेल आइडी पर इ-मेल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाइट्स

२०-२२ फरवरी : बड़ौदा के समता ग्राउन्ड में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान ९२५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पूज्य श्री के विशेष सत्संग-दर्शन कार्यक्रम में ५०० सेवार्थी महात्माओं ने लाभ लिया। आप्तपुत्र द्वारा जो नए ज्ञान लिए हुए महात्माओं के लिए फॉलोअप सत्संग रखा गया था उसका लाभ बहुत सारे महात्माओं ने लिया।

२४-२५ फरवरी : वलसाड में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान १००० महात्माओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। सेवार्थियों के लिए आयोजित सत्संग-दर्शन कार्यक्रम में ३५० सेवार्थियों ने लाभ लिया। सत्संग दौरान लगभग ३७०० मुमुक्षु-महात्माओं ने सत्संग का अमृत पान किया। पूज्य श्री के संग स्थानिक महात्माओं की एक दिन की पिकनिक तथा सत्संग आम के बाग में आयोजित हुआ था। वहाँ पर स्थानिक Lmht के बच्चों ने पूज्यश्री के समक्ष नृत्य प्रस्तुत किया। ज्ञानविधि के बाद खुद के अनुभव तथा प्रश्नों के समाधान के लिए आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग रखने में आया।

२७ फरवरी से १ मार्च : सुरत में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान २५०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थियों के लिए आयोजित सत्संग-दर्शन कार्यक्रम में २५० सेवार्थी महात्माओं ने लाभ लिया। पहले दो दिन के प्रश्नोत्तरी सत्संग कार्यक्रम में लगभग ३५०० मुमुक्षुओं ने सत्संग का लाभ लिया। ज्ञानविधि के दूसरे दिन आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग में बहुत सारे नए मुमुक्षु आए थे।

२-५ मार्च : अडालज त्रिमंदिर संकुल में सोनेरी प्रभात सत्संग में 'अहिंसा' पुस्तक पर जो सत्संग-पारायण चल रहा था वह पारायण यहाँ संपन्न हुआ। पूज्यश्री ने इस पारायण दौरान महात्माओं को हिंसा-अहिंसा से संबंधित अति सूक्ष्मता से समझ दी। आप्तपुत्र-आप्तपुत्री तथा महात्माओं ने भी हिंसा-अहिंसा से संबंधित बहुत सारे प्रश्न पूछे।

६ मार्च : पूज्य दीपकभाई का ४५वाँ ज्ञानदिन लगभग ५००० महात्माओं ने उल्लास के साथ मनाया। त्रिमंदिर के सत्संग हॉल में पूज्यश्री ने नमस्कार करके सर्व महात्माओं से आशीर्वाद लिए। इस प्रसंग के दौरान baby mht के बच्चों ने सुंदर नृत्यगान प्रस्तुत किया। उसके बाद प्रश्नोत्तरी सत्संग हुआ। पूज्यश्री ने महात्माओं के संग उपोदरी भवन में भोजन-प्रसाद ग्रहण किया। रात को पूज्यश्री की अखंड तंदुरुस्ती, दीर्घायु तथा जगत् कल्याण हेतु एक घंटे की कीर्तन भक्ति का आयोजन हुआ था।

५-९ मार्च : सेफ्रोनी मेहसाना में अविवाहित भाईयों के लिए पाँच दिवसीय ब्रह्मचर्य शिविर आयोजित हुई। इस समय ब्रह्मचर्य पुस्तक पर पारायण के संग 'रोजमर्रा के जीवन में ब्रह्मचर्य का पुरुषार्थ कितना जरूरी है?' उस से संबंधित बहुत ही सुंदर सत्संग हुए थे। आप्तपुत्र भाईयों ने खुद के अनुभव कहे कि खुद रोजमर्रा के जीवन में किस तरह पुरुषार्थ करते हैं। आप्तपुत्रों द्वारा ग्रुप सत्संग, व्यक्तिगत मार्गदर्शन तथा नाटक, गरबा, श्री विज्ञान वीसीडी वगैरह कार्यक्रम हुए। लगभग ३८० भाईयों ने शिविर दौरान रजिस्ट्रेशन करवाया। अंतिम दिन में पूज्यश्री के व्यक्तिगत दर्शन से भाईयों ने धन्यता का अनुभव किया। साधक भाईयों ने पूज्यश्री के साथ मोर्निंग वॉक भी किया। पूज्यश्री के ४५वें ज्ञानदिन निमित्त भाईयों ने हाथ में दीप लेकर HAPPY 45 GNAN DAY के आकार में खड़े रहकर पूज्यश्री का स्वागत किया तथा दीप के साथ एरियल व्यू फोटो सेशन में भाग लिया था।

१०-१४ मार्च : सेफ्रोनी, मेहसाना में अविवाहित बहनों के लिए पाँच दिवसीय ब्रह्मचर्य शिविर आयोजित हुई। ब्रह्मचर्य पुस्तक पर पारायण तथा 'आनंद में रहो' इस विषय संबंधित बहुत ही सुंदर प्रश्नोत्तरी सत्संग हुए। आप्तपुत्री बहनों द्वारा ग्रुप सत्संग, व्यक्तिगत मार्गदर्शन तथा नाटक, गरबा वगैरह कार्यक्रम हुए। लगभग ३०६ ब्रह्मचारी बहनों ने शिविर दौरान रजिस्ट्रेशन करवाया। अंतिम दिन में व्यक्तिगत दर्शन से शिविरार्थी बहनों ने धन्यता का अनुभव किया।

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

| | | | |
|--|--------------------|------------------------|---------------------|
| अमृतसर | दिनांक : 24 अप्रैल | समय : शाम 5 से 7 | संपर्क : 9814063046 |
| स्थल : हाऊस नं.76, स्ट्रीट नं-2, गोकुल नगर, गोपाल मंदिर के पास, मगीठा रोड, अमृतसर. | | | |
| जलंधर | दिनांक : 26 अप्रैल | समय : शाम 5 से 7 | संपर्क : 9814063046 |
| स्थल : हाऊस नं.1236, अर्बन एस्टेट फेज़-1. गुरुद्वारा के पास, ग्रह रोड, जलंधर. | | | |
| दिल्ली | दिनांक : 26 अप्रैल | समय : सुबह 10 से 4 | संपर्क : 9810098564 |
| स्थल : लौरैल हार्ड स्कूल, शिव मार्केट सामने, अग्रसेन धर्मशाला, पीतमपुरा, दिल्ली. | | | |
| आगरा | दिनांक : 27 अप्रैल | | |
| समय और स्थल की जानकारी के लिए 9319128468 पर संपर्क करें. | | | |
| कानपुर | दिनांक : 28 अप्रैल | समय : शाम 6 से 8 | संपर्क : 9452525981 |
| स्थल : श्री श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर, परमपूर्वा, धरमकांटा चौराहा, गोविंद नगर, कानपुर. | | | |
| वाराणसी | दिनांक : 29 अप्रैल | समय : शाम 6 से 8 | संपर्क : 9795228541 |
| स्थल : उत्सव वाटिका, लक्सा रोड, गुरुद्वारा के पास, वाराणसी. | | | |
| वाराणसी | दिनांक : 30 अप्रैल | समय : शाम 6 से 8 | संपर्क : 9795228541 |
| स्थल : श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर धर्मशाला, भेलूपुर क्रोसिंग, वाराणसी. | | | |
| नेपाल | दिनांक : 1-2 मई | | |
| समय और स्थल की जानकारी के लिए (977) 9847151944 पर संपर्क करें. | | | |
| गोरखपुर | दिनांक : 3 मई | समय : शाम 6-30 से 8-30 | संपर्क : 9956758693 |
| स्थल : पूर्वी राजेंद्रनगर, तीरकुटाह बाबा स्थान के पास, गोरखनाथ, गोरखपुर. | | | |
| गोरखपुर | दिनांक : 4 मई | समय : शाम 5-30 से 7-30 | संपर्क : 7309061683 |
| स्थल : ग्राम-कोडरीकला, पो.-भीटी रावत, थाना-सहजनवा, गोरखपुर. | | | |
| लखनऊ | दिनांक : 5 मई | समय : शाम 5 से 7 | संपर्क : 8090177881 |
| स्थल : मधुर संगीत विद्यालय, 563/74, चित्रगुप्त नगर, आलमबाग, लखनऊ. | | | |

पूज्य नीरूमाँ का सत्संग सुनि ए रेडियो सीटी 'स्मरण' पर...

हर रविवार सुबह ८ बजे तथा शाम ४ बजे - गुरु-शिष्य का रिश्ता जीवन में होता है खास (हिन्दी में)

लोग इन करें प्लेनेट रेडियो सीटी 'स्मरण' पर <http://www.planetradiocity.com/smaran>

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

मुख्य सेन्ट्रों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद: (079) 27540408, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भूज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, अमरेली त्रिमंदिर: 9924344460, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बैंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885, यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में अडालज त्रिमंदिर में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अहमदाबाद

दि. १५-१६ मई (शुक्र-शनि), रात ८ से १०-३० - सत्संग तथा १७ मई (रवि), शाम ६-३० से १० - ज्ञानविधि

दि. १८ मई (सोम), रात ८ से १०-३० - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : सरदार पटेल स्टेडियम, नवरंगपुरा, अहमदाबाद (गुजरात).

संपर्क : 9909545999

गोधरा

दि. १ जून (सोम), शाम ६ से ८-३० - आप्तपुत्र सत्संग तथा २ जून (मंगल), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि

दि. ३ जून (बुध), शाम ६ से ८-३० - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : त्रिमंदिर, एफ.सी.आई. गोडाउन के सामने, भामैया गाँव, गोधरा (गुजरात).

संपर्क : 9825431503

पालनपुर

दि. ६ जून (शनि), रात ७-३० से १०-३० - सत्संग तथा ७ जून (रवि), शाम ७ से १०-३० - ज्ञानविधि

दि. ८ जून (सोम), रात ७-३० से १०-३० - आप्तपुत्र सत्संग तथा अंबाजी यात्रा

स्थल : गायत्री मंदिर के पास, शिवम सेल्स कोर्पोरेशन के सामने, आबु रोड हाईवे, पालनपुर.

संपर्क : 9825280923

अडालज त्रिमंदिर

दि. २२ अगस्त (शनि), शाम ४-३० से ७ - सत्संग तथा २३ अगस्त (रवि), शाम ४ से ७-३० - ज्ञानविधि

दि. २४ अगस्त (सोम), शाम ४-३० से ७ - आप्तपुत्र सत्संग

पूज्य नीरुमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत

- + 'आस्था' पर सोम से शनि रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
- + 'दूरदर्शन'-बिहार पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ५-३० से ६ (हिन्दी में)
- + 'दूरदर्शन'-भोपाल पर सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ (हिन्दी में)
- + 'दूरदर्शन'-गिरनार पर हर रोज सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
- + 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- + 'दूरदर्शन'-सह्याद्रि पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)

USA

- + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर..

भारत

- + 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर मंगलवार से शुक्रवार सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
- + 'साधना' पर हर रोज शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
- + 'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार पर सोम से शनि दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- + 'दूरदर्शन' गिरनार पर हर रोज रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
- + 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात ८-३० से ९ (गुजराती में)

USA

- + 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST

UK

- + 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह ८-३० से ९ (गुजराती में)

Singapore

- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)

Australia

- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)

New Zealand

- + 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus. + 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में अडालज त्रिमंदिर में आगामी सत्संग कार्यक्रम

PMHT (पैरेन्ट्स महात्मा) शिविर

- दि. २ मई (शनि) - ९-३० से १२ - स्पे. वीसीडी तथा शाम ४-३० से ७ - मा-बाप बच्चों का व्यवहार - सत्संग
 दि. ३ मई (रवि) - ९-३० से १२ - मा-बाप बच्चों के व्यवहार में खडी होती अपेक्षाएँ तथा शाम ४-३० से ७-ग्रुप सत्संग
 दि. ४ मई (सोम) - ९-३० से १२ - पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार - सत्संग तथा शाम ४-३० से ७ - ग्रुप सत्संग
 दि. ५ मई (मंगल) - ९-३० से १२ - पति-पत्नी कम्पेनियन के रूप में - सत्संग तथा शाम ४-३० से ७ - ग्रुप सत्संग
- सूचना : 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है।
 2) इस शिविर में प्रथम दो दिन 'मा-बाप बच्चों का व्यवहार' तथा बाद में दो दिन 'पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार' पुस्तक पर पूज्यश्री दीपकभाई द्वारा सत्संग होगा तथा आप्तपुत्र भाईयों द्वारा ग्रुप डीस्कशन (सत्संग) किया जाएगा। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए। (अगर आपका मोबाइल में एफएम सुविधा है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर ही सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकते हैं।)
 3) शिविर में भाग लेने के लिए अपने नज्दिकी सेन्टर में और अगर नज्दिक में कोई सेन्टर नहीं है, तो अडालज त्रिमंदिर के फोन नं. (079) 39830400 (सुबह ९-३० से १२ तथा दोपहर ३ से ६) पर अपना रजिस्ट्रेशन करवाए।

हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष २०१५

सत्संग शिविर : दि. २८-२९ तथा ३१ मई, समय : सुबह ९-३० से १२, शाम ४-३० से ७
 दि. ३० मई, समय : सुबह ९-३० से १२

ज्ञानविधि : दि. ३० मई, दोपहर ४ से ७-३०

तीर्थ यात्रा : दि. १ जून - पूज्यश्री के संग डाकोर तीर्थ, गोधरा त्रिमंदिर, यात्रा चार्ज - रु. 450-नोन ए.सी., रु. 650-ए.सी.

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। इस शिविर के लिए १५ मार्च से १५ मई २०१५ तक रजिस्ट्रेशन होगा। निम्नलिखित सत्संग केन्द्रों में से अपने नज्दिकी सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं और यदि आपके नज्दिक में कोई सत्संग केन्द्र नहीं है, तो अडालज मुख्य सत्संग केन्द्र के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 पर (सुबह ९-३० से १२ तथा दोपहर ३ से ६) अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें।

- बच्चों-युवकों के लिए इस शिविर के दौरान अलग से विशेष संस्कार सिंचन शिविर का आयोजन किया गया है।

- यदि आप 1 जून को आयोजित यात्रा में शामिल होनेवाले हों, तो आपका वापसी टिकट 2 जून का लें।

| | | | | | |
|-----------|--------------|-------------|--------------|-----------|--------------|
| दिल्ली | : 9810098564 | मुजफ्फरपुर: | 7209956892 | अमरावती | : 9422915064 |
| जलंधर | : 9814063043 | कोलकता | : 9830093230 | जलगाँव | : 9420942944 |
| गाजियाबाद | : 9968738972 | रायपुर | : 9329644433 | मुंबई | : 9323528901 |
| कानपुर | : 9452525981 | भिलाई | : 9827481336 | पूणे | : 9422660497 |
| वाराणसी | : 9795228541 | इन्दौर | : 9039936173 | हैद्राबाद | : 9989877786 |
| जयपुर | : 8560894235 | भोपाल | : 9425676774 | बंगलूर | : 9590979099 |
| पाली | : 9461251542 | जबलपुर | : 9425160428 | हुबली | : 9739688818 |
| पटना | : 7352723132 | औरंगाबाद: | 8308008897 | चेन्नई | : 9380159957 |

अडालज में अविवाहित युवकों के लिए हिन्दी में ब्रह्मचर्य शिविर - दि. २-३ जून, २०१५

जो युवक इस ब्रह्मचर्य शिविर में भाग लेना चाहते हैं, उसकी उम्र २१ से ३५ के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम १ साल हुआ होना जरूरी है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए 9723707737 पर संपर्क करें।

अप्रैल 2015
वर्ष - 10 अंक - 6
अखंड क्रमांक - 114

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD, P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.



चीज़ काम नहीं करती लेकिन भाव काम करते हैं

अहिंसक भाववाला तीर मारे तो ज़रा-सा भी खून नहीं निकलता और हिंसक भाववाला फूल डाले, तब भी किसी को खून निकल जाता है। तीर और फूल इतने इफेक्टिव नहीं हैं, जितनी इफेक्टिव भावना है! इसलिए हमारे एक-एक शब्द में निरंतर हमें ऐसा भाव रहता है कि 'किसी को दुःख नहीं हो' इस भावना से ही 'हमारी' वाणी निकलती है। चीज़ काम नहीं करती लेकिन भाव काम करते हैं। इसलिए हम सभी को भाव कैसे रखने चाहिए कि, प्रातःकाल निश्चित करना चाहिए कि 'जीव मात्र को इस मन-वचन-काया से किंचित्मात्र भी दुःख नहीं हो।' ऐसा पाँच बार बोलकर, यदि सच्चे भाव से बोलकर निकलें और बाद में यदि आपसे गुनाह हो जाए तो यू आर नॉट एट ऑल रिस्पॉन्सिबल (आप तनिक भी जिम्मेदार नहीं हो), ऐसा भगवान ने कहा है। ऐसा क्यों कहा? तो कहते हैं, 'साहब, मेरी तो ऐसी भावना नहीं थी।' तो भगवान कहते हैं कि, 'यस, यू आर राइट!'

-दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.